राष्ट्रमंडल खेल 2010 – दिल्ली में
राष्ट्रीय गौरव किस कीमत पर ?

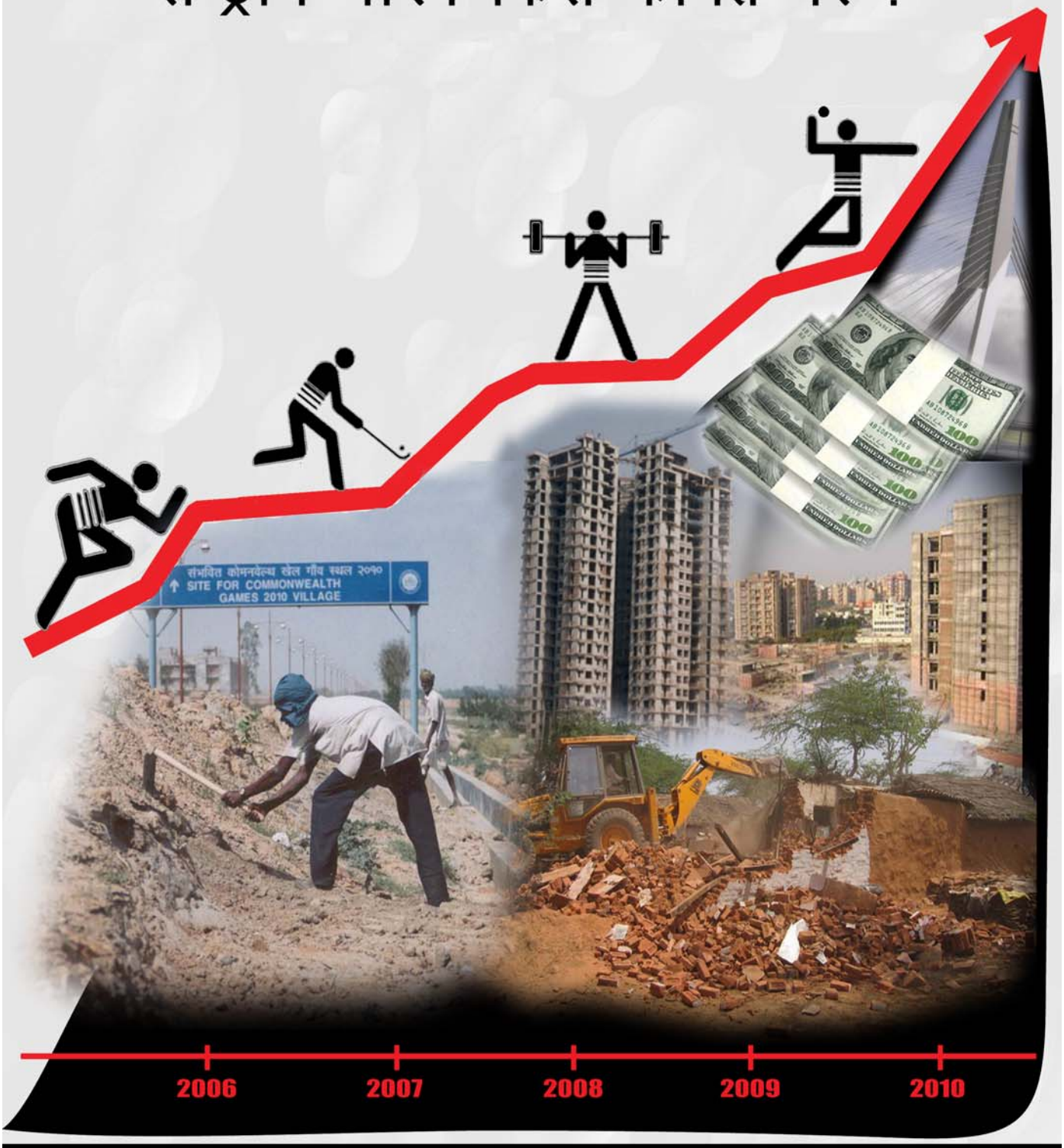

ख़तरा केन्द्र
मार्च 2008

2010 राष्ट्रमण्डल खेल दिल्ली
हिन्दी
कितना खर्चीला राष्ट्रीय गौरव

प्रस्तावना

देश की राजधानी दिल्ली सन् 2010 की सर्दियों में 3 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक होने वाले 19वें राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी करेगा। 1930 से प्रत्येक चौथे साल होने वाले राष्ट्रमंडल खेल 1998 क्वालालाम्पुर के बाद दूसरी बार एशिया में खेलें जाऐगे और मलेशिया और जमैका (1966) के बाद भारत राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी करने वाला तीसरा विकासशील देश होगा। भारत इससे पहले 1990 में इन खेलों की मेजबानी से और 1998 में क्वालालाम्पुर को समर्थन देने के कारण मेजबानी की दौड़ से बाहर हो गया था।

1 अरब लोगों वाला भारत राष्ट्रमंडल का सबसे बड़ा और राष्ट्रमंडल देशों की कुल जनसंख्या के 55% हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। इन खेलों की मेजबानी का निर्णय नवम्बर 2003 में राष्ट्रमंडल खेलों की ''फेडरेशन जनरल एसेम्बली'' की बैठक में भारत के पक्ष में गया। भारत (दिल्ली) ने खेलों के लिए निविदा हेमिल्टन और आनंटेरियो (कनाडा) के विरोध में डाली थी। दिल्ली को ये मेजबानी 72 में से 46 वोट पाकर मिली जबकि विरोध में हेमिल्टन को 22 वोट मिले।

दिल्ली को 1951 और 1982 के ऐशियाड खेलों की मेजबानी का अनुभव है। यह राष्ट्रमंडल खेल, शहर में सबसे बड़ी बहुक्रीड़ा का आयोजन होगा। जबसे भारत को इन खेलों की मेजबानी मिली है तबसे मीडिया, नीतिनिर्धारकों और विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा एक महान आयोजन बताया जा रहा है। 26 मार्च 2006 को मेलबार्न में राष्ट्रमंडल संघ का झंडा दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित और बाद में खेलों की आयोजन समिति के चेयरमैन सुरेश कलमाड़ी के हाथों में सौंपा गया। बालीवुड फिल्म स्टारों और डांसर्स को मेलबार्न क्रिकेट मैदान पर जश्न मनाने के, दिल्ली चलो गाने के लिए 11 मिनट का समय दिया गया। राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी की निविदा हथियाना बिल्कुल वैसा हीथा मानों की इन खेलों में ही विजय प्राप्त कर ली गयी हो।

राष्ट्रमंडल खेल क्या है

राष्ट्रमंडल खेल सबसे पहले 1930 में कनाडा के हेमिल्टन में हुए थे। इस दौरान 11 देशों के 400 एथलीटों को शिरकत करने का मौका मिला। ओलम्पिक की तुलना में यह एक छोटा आयोजन था। इस पहले खेलों का उद्देश्य था "To be merrier and less stern than Olympics"

ये खेल हर चौथे साल राष्ट्रमंडल खेलों के 70 देशों के संघ द्वारा आयोजित कराये जाते हैं। फिर भी इन खेलों का एक अलग इतिहास रहा है चाहे इन खेलों के नाम बदलने को लेकर रहा हो या इन खेलों के अवसर पर उचित समर्थन या रूचि न मिलने को लेकर रहा हो। 1950 के ऑकलैंड खेलों में केवल 12 देशों ने भाग लिया वहीं 1986 के एडिनबर्ग खेलों में अफ्रीकन और वेस्टइंडीज़ देशों ने इन खेलों का बहिष्कार कर दिया था। ये खेल न केवल ओलम्पिक्स के कारण बल्कि विश्व चैम्पियनशिप की अन्य प्रतियोगिताओं और खेलों जैसे सॉकर विश्वकप, रग्बी यूनियन, क्रिकेट की तुलना में द्वितीय श्रेणी के खेल माने जाते हैं। ये खेल, खेल सम्बन्धों के बन्धन (संधि) के तौर पर 70 देशों को आकर्षित करते हैं और इन खेलों में खिलाड़ियों का प्रदर्शन ओलम्पिक और अन्य विश्व चैम्पियन प्रतियोगिताओं की तुलना में कमतर ही रहता है।

फिर भी इन खेलों को राष्ट्रमंडल देशों में से ज्यादातर को समर्थन मिल जाता है। ज्यादा बड़ा आयोजन न होने के बावजूद खेल स्थलों और टेलिविजिन के माध्यम से अच्छा खासा दर्शकवर्ग भी मिल जाता है। राष्ट्रमंडल खेल विश्व के एथलीटों को "ओलम्पिक ऑफ सीज़न" के दौरान एक मंच उपलब्ध कराता है ताकि वे खेलों में अपना बेहतर स्थान बना पायें।

राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी क्यों ?

ओलम्पिक की तरह ही राष्ट्रमंडल खेल भी मेजबान देश के लिए सम्मान का विषय हो जाते हैं क्योंकि इससे उसे लाभ होता है जो कि मेजबान देशों द्वारा प्रस्तावित किऐ जाते हैं। यद्यपि इन खेलों में खतरा और कीमत को देखते हुए भी ज्यादातर देश इन खेलों की मेजबानी के लिए तैयार रहते हैं क्योंकि वे उसे ''राष्ट्रीय सम्मान'' की तरह देखते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात तो ये है कि ये खेल विश्वव्यापी डॉलर का निर्माण और उनके पुनःवितरण का साधन बनते हैं। ऐसी आशा की जाती है कि इन खेलों के आयोजन से पहले के वर्षों में लाखों डॉलर आने से अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी है। जैसे बड़े खेल सुविधाओं के निर्माण आदि से। और यदि शहर अपना अच्छा प्रस्तुतिकरण देगा तो भविष्य में पर्यटक और बड़े व्यापारी आकर्षित होंगे। खेलों के दौरान एथलिटों, अधिकारियों, टेलिविज़न, स्टाफ और खेल प्रेमियों सहित हज़ारों लोग आएंगे और वे अपने प्रवास के दौरान अच्छा खासा खर्च करेंगे। साथ ही वे लोग प्रति व्यक्ति उपयोग के औसत से ज्यादा ''राशि'' खर्च करेंगे।

- इससे भी ज्यादा विज्ञापनों से आय की आशा की जाती है जो कि कम्पनियां अपने उत्पाद और सेवाओं को विश्वव्यापी उपभोक्ताओं तक पहुंचाने की आशा करती है।
- ये खेल सामान्यतः शहरी पुनःनवीनीकरण कार्यक्रमों में सहयोग देते हैं, जो कि निश्चित चुने हुए क्षेत्र के तत्कालिक विकास के माध्यम से शहर को ''अपग्रेड'' करने में मदद करते हैं।
- ऐसा भी माना जाता है कि खेल शहर को विश्व स्तर पर ''एक्सपोज़र'' देते हैं। लेकिन ये महज एक सपना हो सकता है। जहां राष्ट्रमंडल में 70 देश शामिल हैं लेकिन वहीं इन देशों में विश्व जनसंख्या का केवल 30% हिस्सा ही शामिल है।

हमारी चिन्ताएं

हमारे नीति–निर्धारक यह दावा कर रहे हैं कि 2010 के राष्ट्रमंडल खेल शहर के लिए बहुत बड़े फायदे का सौदा साबित होंगे। शहर को इस आशा के साथ सजाया एवं तैयार किया जा रहा है कि इससे पर्यटन और सरकारी आय में तेज़ी आएगी। ''कॉमनवेल्थ गांव'' सहित राजधानी के हृदयस्थल पर नया निर्माण कार्य किया जा रहा है। सुरेश कलमाड़ी का कहना है कि "यह एक बड़ा व्यापारिक अवसर है कई नौजवानें को कई नौकरियां मिलेगी।"

लेकिन इस सब कोरी लफ्फाजी के बीच में देखना ज़रूरी है कि इन खेलों के दावों का आधार क्या है और इन दस दिनों के गौरव का क्या असर होगा?

यह रिपोर्ट पुस्तिका इस सम्बंध में कुछ मौलिक प्रश्नों के माध्यम से तथ्यों की जांच करती हैः–

- इन खेलों की आर्थिक कीमत क्या होगी और इसे कौन भुगतेगा?
- इन खेलों की शहर की पर्यावरणीय और सामाजिक कीमत क्या होगी?
- क्या दिल्ली सामाजिक और आर्थिक रूप से मेजबानी के लिए तैयार हैं?
- आखिर हम इन खेलों की मेजबानी क्यों कर रहे हैं?

हम इन प्रश्नों को उन देशों के संदर्भ में प्रस्तुत कर रहे हैं जिन्होंने पूर्व में इस तरह के खेलों की मेजबानी की है।

यह कहना ज़रूरी नहीं कि इस तरह की चिन्ताओं के लिए इस तरह के शोध की आवश्यकता क्यों पड़ी? वास्तव में ये दस्तावेज हमारी चिन्ताओं को समझने के और समझाने के प्रयास हैं।

दिल्ली – 2010 की योजना

खेलों की तैयारी के लिए और खेलों के दौरान हज़ारों खिलाड़ियों और दर्शकों की मेहमानवाजी की आवश्यकता को देखते हुए दिल्ली में बहुत बड़े स्तर पर विकास कार्य जारी है। ठीक 1982 के एशियाड की तरह ''इन्फ्रास्ट्रक्चर'' के विकास और सुधार पर जोर दिया जा रहा है जिसमें खेल, स्टेडियम और काम्प्लेक्स, यातायात सुविधाएं जैसे ''फ्लाई ओवर, सड़कें, बसें, एयरपोर्ट, व्यापारिक काम्प्लेक्स, होटल और पर्यटन स्थल'' आदि शामिल हैं। 1982 के एशियाड के दौरान दक्षिण और केन्द्रीय दिल्ली को बदल कर रख दिया और राष्ट्रमंडल खेलों के लिए यमुना बेल्ट और पूर्वी तथा दक्षिणपूर्व दिल्ली को बदला जा रहा है। कलमाड़ी मानते हैं ''हमारे ऊपर बड़ी ज़िम्मेदारी है लेकिन मुझे आशा है कि खेल आयोजन की वजह से (दिल्ली में) लोगों को तोहफा मिलेगा। हम वास्तव में यह दिखाना चाहेंगे कि भारत क्या दे सकता है।''

कुछ विकास कार्य जो कि कुछ समाचार पत्रों के माध्यम से सूचित किया गया वह निम्न हैं:–

खेल स्थान

- राष्ट्रीय राजमार्ग 24 पर यमुना के किनारे, अक्षरधाम मंदिर से आगे एक नया ''कॉमनवेल्थ विलेज'' बनाया जाएगा। 40 एकड़ ज़मीन पर फैला ये गांव 8500 प्रतियोगियों और अधिकारियों के रहने के लिए बनाया जाएगा। इस ''स्टेट–ऑफ–आर्ट'' गांव को दो क्षेत्रों में बांटा जाएगा। पहला निवास क्षेत्र और दूसरा ट्रेनिंग सुविधाओं के लिए और इसके अलावा एक एयर कंड़िशन्ड सभागार, डायनिंग हॉल, वाकिंग सुविधाएं, फिटनेस सेन्टर, सांस्कृतिक और संचार केन्द्र भी होंगे।

- 2010 के राष्ट्रमंडल खेलों में 15 खेल शामिल होंगे : एक्वाटिश, एथलेटिक्स, बैडमिंटन, बॉक्सिंग, साइक्लिंग, जिम्नास्टिक, हॉकी, लॉन बॉल, रग्बी, शूटिंग, स्क्वैश, टेबल टेनिस, भरोतोलन, ब्रेस्टिलिंग और नेट बाल। इसके लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण ने सूरजमल विहार में यमुना स्पोर्टस काम्प्लेक्स, 5 नए आउटडोर स्टेडियम और दो इनडोर स्टेडियम बनाने की योजना बनाई है। इस उद्देश्य के लिए 40,000 स्कवायर मी. ज़मीन की पहचान की गयी है।

- स्पोर्टस काम्प्लेक्स जो कि 1982 में एशियाड खेलों के लिए बनाया गया था उसे फिर से सुधारा जा रहा हे। साथ ही जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम जो कि स्वागत और समापन समारोह के लिए खोला जाएगा और एथलेटिक्स लॉन बाल और भरोतोलन के लिए भी। मेजर ध्यानचन्द नेशनल स्टेडियम हॉकी के लिए, डा. श्यामा प्रसाद मुकर्जी स्टेडियम तैराकी के लिए, इंदिरा गांधी खेल काम्प्लेक्स जिम्नास्टिक, साइक्लिंग और ब्रेस्टलिंग के लिए। डा. करनी सिंह शूटिंग रेंज, त्यागराजा स्पोर्ट काम्प्लेक्स नेटबाल के लिए और तालकटोरा स्टेडियम बाक्सिंग के लिए खोले जाऐंगे। ये सभी नए तरीके से सुधारे हुए स्टेडियम होंगे जैसे बदले हुए कमरे, गलियां, लीकप्रूफ छतें और एयरकंडीशनिंग प्लांट आदि।

होटल और आरामगाह

लगभग 19 पांच सितारा और कुछ कम महंगे होटल जिसमें पूर्वी दिल्ली (दो मयूरविहार में, एक शहदरा में) और दक्षिण दिल्ली (दो जसोल में और एक ओखला में) शामिल हैं, खोलने की योजना तैयार की गयी है। अन्य सुविधाओं जैसे रेस्टोरेंट, शापिंग और रीक्रियेशन मॉल और सेन्टर भी लगतार बनाए जा रहे हैं, खासकर यमुना के स्थल पर। खेलों के दौरान राष्ट्रमंडल खेलों की कलाओं की प्रदर्शनी, संध्या मनोरंजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम, फूड फेस्टिवल और हैरिटेज पैकेज भी आयोजित किये जायेंगे। सरकार भी एक ''मिनी इंडिया टूरिज़्म एंड कल्चर पार्क'' बनाने का इरादा रखती है।

यातायात

एयरपोर्ट, खेल सेन्टरों और होटलों और पर्यटन स्थल के बीच खिलाड़ियों और पर्यटकों के लिए अच्छी सड़कों को बनाने के लिए काम लगातार जारी है।

एयरपोर्ट

दिल्ली सरकार की एक अत्याधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय (निजी) हवाईअड्डा बनाने की योजना है जिसका ठेका फरवरी 2006 को इन्टरनेशनल कन्सोर्टिया को प्रदान किया गया।

सड़कें

शहर की रिंग रोड ''एक्सप्रेसवे'' में तब्दील हो गयी है। दो रिंग रोड के अलावा एक तीसरी रिंग रोड का निर्माण राष्ट्रमंडल खेल गांव को सुविधा देने के लिए बनायी जाएगी।

200 मी. लम्बे सुरंगनुमा ''कैरिजवे'' प्रस्तावित किया गया है जो कि खेलगांव से जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम तक जोड़ी जाएगी। यह निजामुद्दीन पुल से सब्जबुर्ज (लोधी रोड) तक होगी।

- यमुना के आर पार दो नए पुल, गीताकालोनी और वजीराबाद में भी पूर्वी दिल्ली के जुड़ाव को बेहतर करने के लिए बनाए जाएंगे। वजीराबाद पुल लंदन के एक पुल की तरह होगा।
- एक अण्डरब्रिज भी विवके विहार रेलवे क्रासिंग पर बनाया जाएगा। दो बाईपास मसूदपुर और महिपालपुर में बनाए जाएंगे।
- सड़कों का सुधार खेल स्थल के नज़दीक होगा। 129.20 कि.मी. सड़क का सौन्दर्यीकरण और 37.8 कि.मी. सड़क चौड़ी करने की योजना लागू होगी।
- एक विशेष ''लेन'' एथलीट वाहन को समर्पित होगी।

बसें

- एक ''मल्टीमॉडल'' यातायात सुविधा विकसित होगी। उच्चक्षमता वाली बसें 7 कॉरिडोर में चलायी जाएंगी।
- दिल्ली परिवहन निगम 1,100 निचले फर्शोंवाली बसें जिसमें 200 एसी, 800 नॉन एसी, और 100 मिनी एसी बसें होंगी, चलाई जाएंगी जो हवाई अड्डा, होटल स्टेडियम और पर्यठन स्थलों से सम्पर्क के लिए होंगी।
- सभी बसें स्वचालित वाहन ट्रैकिंग सिस्टम पर आधारित होंगी जो न केवल "हाईस्पीड" क्षमतावाली होगी बल्कि ट्रिप मिस्ड (किसी के छूट जाने पर भी काम आएगी)
- बसों के ठहरने की जगहों को सुधारने की योजना है और ''मल्टीलेवल'' पार्कों, को भी जो कि सभी निजी एजेन्सियों द्वारा निर्मित किये जाएंगे।
- बेल्जियम की मदद से खेल स्थलों पर स्ट्रीट लाईट को सुधारने का प्रस्ताव है।

फ्लाईओवर

सन! 2009 से पहले 40 नए फ्लाईओवर बनाए जाएंगे ताकि ट्रैफिक नियंत्रण किया जा सके। और बहुत सी जगहों पर काम जारी है।

मेट्रो

सड़कों को चौड़ा करने की योजना के अलावा ''दिल्ली मेट्रो'' राष्ट्रमंडल खेलों से पहले नोएडा तक अपना विस्तार करेगा। इसी प्रस्ताव, जिसके चलते उ0प्र0 सरकार और दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन के बीच एक समझौते पर दस्तखत हुए हैं।

Proposed Budgets

Transport Department

स्वास्थ्य और आरोग्य सुरक्षा

स्वास्थ्य विभाग ने, "सुपर स्पेशल अस्पतालों" से जोड़ने वाली, बेहतर नेटवर्क सुविधा के तहत ''स्टेट–ऑफ–द–आर्ट–स्पोर्टस'' सुविधा, अस्पताल को निर्मित करने का प्रस्ताव बनाया है और 50 नई उच्चतकनीकी सुविधा वाली एम्बुलेंस, विभिन्न खिलाड़ियों के लिए अलग–अलग खेल जगहों पर आवश्यक बताकर उसे भी सूची में शामिल किया है। एम.सी.डी. ने भी एक योजना तैयार की है जिसके तहतः–

- नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली, निजामुद्दीन और सराय रोहेला, रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड और पार्कों को सुधारना

- तकनीकी ''स्वीपर्स'' और कूड़ा–करकट हटाने का पुख्ता इंतज़ाम होगा और स्वास्थ्य और आरोग्यता स्टाफ के लिए एक यूनीफार्म होगी।

Health and Family Welfare

जल

- 1 एम.सी.डी. प्लान्ट खेल गांव में फिल्टर पानी की सप्लाई के लिए लगाया जाएगा। सीवेज प्लान भी लागू किया जाएगा।
- पानी की सप्लाई और सीवेज की साफ सफाई के लिए स्टेडियमों में सुविधा रहेगी।

बिजली

खेल गांव में बिजली की ज़रूरत को पूरा करने के लिए दिल्ली सरकार ने 13 मिलियन की लागत से गैस आधारित संयुक्त चक्र ''प्रगति II'' पॉवर प्रोजेक्ट लागू किया है और इसके लिए उत्तम नगर में 15 मिलियन की लागत से 66 किलोवॉट का ग्रिड सब–स्टेशन बनाने की दिल्ली विकास प्राधिकरण'' (डी.डी.ए.) से 4387.17 स्क्वायर मी. ज़मीन खरीदी गई है। दिल्ली सरकार ने निजी कम्पनियों को 1000 मेगावॉट का प्लांट बवाना में लगाने की अनुमति दे दी है।

खेलों की कीमत

प्रारम्भिक निविदा

इन खेलों के लिए भारत के निविदा सम्बन्धी दस्तावेजों के अनुसार 2002 में कुल बजट 422 मिलियन डॉलर (रु.1772 करोड़) रखा गया। इसमें से 235 मिलियन डॉलर (रु. 986 करोड़) ढांचागत निर्माण में खर्च किऐ जा चुके हैं। बचे 163 मिलियन डॉलर खेल गांव निर्माण पर खर्च किए जा रहे हैं।

वर्तमान लागत

योजना आयोग को सरकार के दिल्ली राष्ट्रीय पूंजी क्षेत्र की ओर से जो अलग से योजना सौंपी गयी उसके मुताबिक ढांचागत विकास के लिए बजट में रु.770 करोड़ निश्चित किए गये थे जिन्हें विभिन्न विभागों ने अपने हाथ में लिया है। जिसमें इस धन का एक बड़ा भाग यातायात और लोक निर्माण पर खर्च हो रहा है।

फिर भी यदि कोई इन सभी खर्चों को जोड़ें जो कि विभिन्न प्रस्तावों के तहत विभिन्न विभागों द्वारा अभी तक जनता के सामने लाए गये हैं तो इस पूरे खर्चे की लागत लगभग 23000 करोड़ बैठती है।

इन आंकड़ों में अभी विभिन्न मदों पर समय–समय पर खर्च हुए धन के आंकड़ें सम्मिलित नहीं हैं क्योंकि उनकी जानकारी उपलब्ध नहीं करायी गयी है।

परियोजना की लागत

तथ्य ये है अगस्त 2006 में दिल्ली के वित्त मंत्री और लोक निर्माण विभाग मंत्री ए.के. वालिया ने ये खुलासा किया कि इन खेलों से सम्बन्धित ढांचागत विकास की कीमत 26,808 करोड़ तक पहुंच सकती है।

तथ्य ये भी है कि राष्ट्रमंडल खेलों पर किया जाने वाला खर्च उससे ज्यादा होगा जितना कि अनुमान लगाया गया था। बहुत से चिन्तित नागरिकों द्वारा समय समय पर इस मुद्दे को उठाया गया। केन्द्रीय खेल मंत्री मणीशंकर अय्यर ने, दिल्ली सरकार और ओलम्पिक एसोसिएशन के इस खर्चीली योजना की, जिसके तहत 150 मिलियन डालर (रु.4830 करोड़) बेतरतीब खर्च करने को लेकर आलोचना की ओर कहा कि इस पैसे को देश की खेल व्यवस्था को विकसित करने में अच्छे से खर्च किया जा सकता था। प्रस्तावित बजट 335 मिलियन डालर से डालर 1150 मिलियन डालर पहुंच गया और कोई भी इस बेतहाशा खर्च पर अपनी आंखें कैसे बंद रख सकता है।

वास्तविक कीमत

यह जानना ज़रूरी है कि इन खेलों की वास्तविक कीमत क्या है जो इन खेलों पर खर्च की जा रही है। ''हज़ार्डस सेन्टर'' ने सूचना के अधिकार के तहत दो अलग–अलग प्रार्थना पत्र भेजे, 9 सितम्बर 2006 को मानव संसाधन विकास मंत्रालय में और 23 जनवरी 2007 को युवा और खेल मामलों के मंत्री को, और प्रोजेक्ट रिपोर्ट का ब्यौरा मांगा। फिर भी किसी भी विभाग ने दिए गए समय के बावजूद भी कोई सूचना उपलब्ध नहीं करायी। केन्द्रीय सूचना आयोग के पास 18 जून 2007 को इस सम्बंध में एक प्रार्थना पत्र भेजा गया लेकिन वहां से भी कोई जवाब प्राप्त नहीं हुआ।

इस खर्चे पर वास्तव में इस सम्बंध में कुछ भी साफ नहीं है कि कितना पैसा बनाया जाएगा और कितना खर्च किया जाएगा और बाद में इसे कौन भुगतेगा।

पैसे का (खर्च का) बढ़ना

केन्द्रीय वित्त मन्त्रालय ने राष्ट्रमंडल गांव के निर्माण के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण से उसके (डी.डी.ए.) धन की उगाही (Generate) के सम्बंध में पूछा। केन्द्र सरकार इस मामले में खेलों के खर्च को लेकर सावधान है क्योंकि 1982 के एशियन खेलों में किया गया निवेश किसी उपयोग का न रहा और एक वित्तीय बोझ बन गया। योजना आयोग ने इसके चलते यह सुझाव दिया कि डी.डी.ए. को राष्ट्रमंडल खेल गांव के निर्माण को निजी 'बिल्डरों' को सौंप देना चाहिए। हालांकि योजना आयोग ने 2006–07 के लिए दिल्ली को 5,200 करोड़ रुपए दिए हैं जिसमें 200 करोड़ रुपए राष्ट्रमंडल खेलगांव के लिए प्रदान किए गए। इस तरह योजना यह है कि खेलों की समाप्ति के बाद राष्ट्रमंडल खेलगांव पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्यटन स्थल में बदला जा सकता है या फिर खर्चे की भरपाई के लिए बेचा जा सकता है।

अब खेलगांव के लिए धन उगाहने के लिए डी.डी.ए. ने आठ होटलों के प्लाट की बोली लगाने (नीलामी करने) का फैसला किया है। दिल्ली सरकार की विकास कार्यों के लिए मिले धन में से 27% खेलों के लिए प्रदान करने की योजना है।

फिर भी खेलों की कुल कीमत को (खर्चे) को वापस दिलाने के लिए क्या किया जा रहा है। यह वित्तीय गुणा भाग भी तत्कालिक कोई ज्यादा धन की वापसी नहीं कराता क्योंकि वर्तमान बजट यह

संकेत देता है कि खेलों पर किया जा रहा खर्च पहले से तिगुना हो चुका है। और बजट में लगभग 5 बार फेरबदल कर वास्तिवक खर्च छुपाया गया है। दूसरे शब्दों में खेलों के लिए पैसा उगाही के लिए पब्लिक फंड, बाजार और वित्तीय संस्थानों से पैसा उधार लिया जा रहा है जिसके लिए मीडिया और सरकार दोनों मिलकर इस आयोजन को राष्ट्रीय जीत बताकर ''प्रोपेगेण्डा'' बना रही है। और ये तो हम सब बाद में देखेंगे कि किस तरह यह बड़ा आयोजन जब खत्म हो जाएगा और निवेश रुक जाएगा तो कर्ज का बोझ इस देश पर बढ़ जाएगा क्योंकि निवेश की वापसी बहुत कम होगी। और इस कर्ज़े के बोझ को इस देश की जनता से, टैक्स और वस्तुओं की कीमत बढ़ाकर वसूला जाएगा।

क्या बड़े खेल पैसा बनाते हैं

जनता की बहुत बड़ी रकम 2010 के राष्ट्रमंडल खेलों पर यह दावा करके खर्च की जा रही है कि इस पर खर्च किए गए निवेश से ज्यादा रकम वापस लौटेगी, क्योंकि ये खेल बहुत बड़ा पैसा बनाने का जरिया है और यह समाज के सभी भागों को लाभ पहुंचाएगा।

सुरेश कलमाड़ी का कहना है कि ''इन खेलों की कीमत कम करने के लिए हमें बहुत से प्रायोजक मिलेंगे, खेलों का होना, घाटे का आयोजन नहीं कहा जा सकता। सुरेश कलमाड़ी, जो कि भारतीय ओलंपिक संघ के सहायक अध्यक्ष हैं, वो तो 2016 के आलम्पिक की निविदा के लिए भी तैयार हैं क्योंकि उन्हें यह यकीन है कि राष्ट्रमंडल 2010 तक भारत में निर्माण कार्य (इन्फ्रास्ट्रक्चर) तैयार हो जाएगा। वे तो यहां तक कहते हैं "हम खर्च की गयी रकम से दुगुना प्राप्त करेंगे। यह मेजबान देश के लिए हर परिस्थिति में विजेता की स्थिति है।"

फिर भी यह पूछना आवश्यक है कि किसी भी भारतीय आयोजक को इस तरह के बयान देने की क्या ज़रूरत है। दिल्ली के लिए क्या दिशा और निर्देश होंगे। क्या वे दूसरे देश जिन्होंने राष्ट्रमंडल और आलम्पिक खेलों की मेजबानी की, क्या वे रकम वसूल पाएं? क्या उन्हें कोई लाभ हुआ?

इस सम्बंध में नीचे दी गयी तालिका उन देशों के बारे में जिन्होंने पूर्व में बड़े खेलों जैसे कॉमनवेल्थ गेम्स और आलम्पिक का आयोजन किया है साफ तस्वीर पेश कर रही है।

ऊपर दिखाये गये आंकड़े जो कि उपलब्ध हुए हैं, उनमें से सिर्फ 1984 के लॉस एंजिल्स को छोड़कर कोई भी खेल आयोजन पिछले 40 सालों से लाभ का दावा नहीं करता। वर्तमान में लोकप्रिय दृष्टिकोण और राज्य सरकार के व्यवस्थित प्रचार और मीडिया प्रोपेगेंडा के चलते ''इन महान आयोजनों'' में ज़रूरत से ज्यादा खर्च किया गया और शहर को बहुत बड़ा घाटा उठाना पड़ा क्योंकि अनुमानित लागत (बेहिसाब खर्च) और ''रिवेन्यू'' उतना तक नहीं लौटा जितनी कि आशा की गयी थी। इन शहरों में से ज्यादातर इस आयोजन की वजह से कर्ज़दार हो गये और दशकों से उसे चुकता कर रहे हैं।

इन बड़े खेलों में किए गए निवेश का ज्यादातर भाग इमारतों के निर्माण में खर्च किया जाता है। इस तरह के निर्माण का एक बड़ा भाग घाटे का ही सौदा साबित होते हैं क्योंकि ये अनियमित खर्चे पर जिस तरह से विशाल स्तर पर बनाये तो जाते हैं लेकिन बाद में किसी काम के नहीं रहते। यह लम्बे समय के लिए पैसे की बर्बादी कराते हैं क्योंकि ये खेलों के बाद बहुत ही कम प्रयोग में लाए जाते हैं जबकि इन इमारतों के रखरखाव की कीमत बहुत ज्यादा होती है। लगभग सभी शहर जो

कि इस तरह के बड़े खेलों के आयोजनकर्ता रहे हैं, वे सभी इन निरर्थक प्रयासों के निर्माण का रोना रो रहे हैं।

केवल वे ही शहर आशा के अनुरूप अपने निवेश की वापसी कर पाए जिन्होंने अपनी मेजबानी के दौरान पहले से निर्मित खेल सुविधाओं को ही आयोजन स्थल बनाया जैसे होटल, खेल स्थल, सड़कें आदि और इन शहरों में पिछले 40 सालों में केवल ''लास एंजिल्स'' का ही नाम लिया जा रहा है।

दरअसल इस पूरी खेल मेजबानी की प्रक्रिया में खेलों के 'सफलतापूर्व आयोजन' का अर्थ है शहर का बहुत सा पैसा निवेश करना और बाद में कर्ज का बोझ ढोना। इस तरह के बहुत से उदाहरण इस तर्क की पुष्टि के लिए काफी हैं।

ओलम्पिक

म्यूनिख 1972

इन खेलों की मेजबानी के चलते शहर को 1 मिलियन डालर का घाटा सहना पड़ा।

मॉन्ट्रियल 1976

मॉन्ट्रियल खेल एक बड़े घाटे का सबसे क्लासिक उदाहरण है। कान्ट्रियल के मेयर ''जीन ड्राप्यू ने 1976 के ओलम्पिक आयोजन के अधिकार लेने के बाद कहा ओलम्पिक खेल, एक व्यक्ति द्वारा एक बच्चे के खर्चे से ज्यादा महंगे नहीं हो सकते।

''लेकिन ये खेल एक बहुत बड़े आर्थिक विनाश के कारण बने। ये खेल मान्ट्रियल के निर्माण और खेलों के लिए किए गए निर्माण की वजह से काफी महंगे (खर्चीले)साबित हुए।

इन खेलों की मेजबानी के लिए शहर के लिए कुल 310 मिलियन डॉलर का प्रस्ताव था लेकिन चार बार खर्च बड़कर 2 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। इसका कारण वहां व्याप्त भ्रष्टाचार, बुरा प्रबन्धन और गलत योजनाएं थी। 'मान्ट्रियल क्लिबलैण्ड स्टेडियम' बहुत भव्य और खर्चीला बनाया गया था। इसकी कीमत (प्रारम्भिक लागत अनुमान) 200 मिलियन डॉलर थी लेकिन अन्त में इसकी कीमत पहुंची 2.4 बिलियन डॉलर और अब इसे ''बड़ा शोक'' कहा जाता है। कनाडा सरकार ने जो दूसरी बड़ी इमारतें बनवाने में जो कि बाद में कम प्रयोग की थी और इनका रख–रखाव काफी महंगा था, इन इमारतों को बनाने में सरकार ने लाखों डॉलर पानी की तरह बहाएं।

इस 1 बिलियन डॉलर के भारी नुकसान का घाटा सहने के बाद, बढ़ी हुई कीमतों के तहत अब 30 साल बाद, यानि 2008 में इस कर्जे की अदायगी की जा सकेगी जो सरकार ने लिया था। इसके लिए शहर के धूम्रपान के शौकीन लोगों से 6 में से 1 सेन्ट इस चिरकालिक कर्ज की अदायगी के लिए खर्च करने को कहा गया है।

मान्ट्रियल के इस आर्थिक शोक के उदाहरण को देखते हुए बहुत से देश ओलम्पिक की मेजबानी को लेकर सतर्क हो गए इसलिए 1984 की गर्मियों में होने वाले आलम्पिक खेलों की निविदा बिना किसी अन्य प्रतियोगी के लॉस एन्जिल्स को मिल गयी। वास्तव में 1984 के ओलम्पिकस में किसी दूसरे देश के निविदा में शामिल न होने का कारण मान्ट्रियल का शोकपूर्ण अनुभव था।

लाभ कमाने वाले शहर

मीडिया और अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक कमेटी प्रायः यह बयान देते हैं कि वार्सिलोना, अटलांटा और लॉस एंजिल्स जैसे शहरों ने आलम्पिक मेजबानी की वजह से आर्थिक लाभ कमाया है। लेकिन तथ्य ये है कि जो कीमत खेलों के लिए सार्वजनिक तौर पर घोषित गी गयी वह प्रायः स्थानीय असैर राज्य की जमा पूंजी, फंड तथा चल सम्पितयों के माध्यम से प्राप्त की गयी।

ओलम्पिक

लॉस एंजिल्स 1984

ओलम्पिक 1984 के लॉस एंजिल्स के बारे में यह दावा किया जाता है कि 1932 के बाद यह पहला शहर है जिसने लाभ कमाया। फिर भी यह तब सम्भव हुआ जब संघीय करों से 75 मिलियन डॉलर वसूल किए गए और 30 से ज्यादा कम्पनियों के 126 मिलियन डॉलर इसमें शामिल (ओलंपिक आयोजन में) थे। जिन खेलों का पूर्वी ब्लाक के देशों ने बहिष्कार किया था वे निजी फंड द्वारा प्रायोजित थे। शहर में कोई नया बड़ा निर्माण कार्य नहीं किया गया। और महत्वपूर्ण निर्माण कार्य को बड़े कारपोरेट प्रायोजकों ने पूरा किया। इस तरह आलम्पिक कराने वालों ने देखा कि लॉस एंजिल्स में ओलम्पिक कराना औपचारिक ही साबित हुआ क्योंकि कुछ नए ''प्रोजेक्ट'' पहले से ही तैयार होने को थे। सब कुछ पहले से ही तैयार था। लेकिन इन खेलों ने ''कोरपोरेट'' जगत की अद्वितीय भागेदारी का नमूना देखा।

वार्सिलोना 1992

1992 के वार्सिलोना ओलम्पिक के बारे में भी सफल होने का दावा किया जाता है क्योंकि वे बेहतर ढंग से आयोजित किए गए थे। लेकिन ये खेल भी सस्ते स्तर पर नहीं हुए और कर्ज का कारण साबित हुए। इन खेलों की प्रारम्भिक लागत 7.5 बिलियन डॉलर थी जो बाद में 10 बिलियन डॉलर पहुंच गयी। सरकारी आय हुई केवल 2 बिलियन डॉलर। 10 बिलियन डॉलर में से 6 बिलियन डॉलर व्यापारिक फंडिंग से जुटाए गए जैसे लाटरी और प्रायोजन से, और निजी निवेशकों ने होटल व्यवसाय पर खर्च किया। इन खेलों ने मान्ट्रियल खेलों जैसा ही भयावह घाटा दिया जो अब इस कर्ज को स्पेन के करदाताओं द्वारा चुकाया जा रहा है।

अटलांटा 1996

1996 के अटलांटा ओलम्पिक के बारे में भी यह दावा किया जाता है कि उन्होंने लाभ कमाया है। अधिकाधिक तौर पर अटलांटा को 10 मिलियन डॉलर का फायदा हुआ लेकिन हकीकत तो यह है कि 1 बिलियन डॉलर की खर्च की गयी कीमत के कारण बड़े हुए कर्ज के चलते अटलांटा करदाता इस कीमत को बड़े हुए कर दरों से चुका रहे हैं। 1996 में अटलांटा खेलों की कीमत 1.7 बिलियन डॉलर थी। वे सभी खर्चीले ओलम्पिक खेल स्थल जिसमें शूटिंग साइट, बीच वालीबाल, डाऊनटाऊन कंटेनियल ओलंपिक पार्क आदि स्थल जिन पर भव्यता से खर्च किया गया था वे बाद में किसी काम न आ सके।

सिडनी 2000

यह दावा किया गया कि 2000 के सिडनी ओलम्पिक ने आस्ट्रेलिया को अर्थव्यवस्था में 3.3 बिलियन डालर की वृद्धि की है। लेकिन सरकार भी यह मानती है कि इस तरह के खेलों का आयोजन के खर्च और वापसी की यह सही तस्वीर नहीं थी।

दूसरे शहरों की तरह ही सिडनी ओलम्पिक 2000 भी बड़े वित्तीय घाटा साबित हुए। 1993 में जब सिडनी ने इन खेलों के लिए निविदा पेश की तब उसमें 2.5 बिलियन डालर कीमत थी लेकिन अन्त में खर्च हुए 5.6 बिलियन, बिल्कुल पेश की गयी लागत से दुगुना खर्च हुआ। कुल मिलाकर 2.6 बिलियन डॉलर के इस घाटे को पूरा करने के लिए सिडनी के करदाता 320 मिलियन डालर को पूरा करने के लिए सालों तक कर देते रहेंगे।

कीमतों का बढ़ना और कर्ज का बढ़ना इसलिए सम्भव हुआ क्योंकि पर्यटन में यह वृद्धि नहीं हो पायी जो आस्ट्रेलिया को आशा थी। और वे सभी सुविधाएं जो तैयार की गयी थी जैसे 200 मिलियन डॉलर से बनाया गया ओलम्पिक स्टेडियम सहित दूसरे खर्चीली इमारतें बेकार साबित हुई। 200 मिलियन डॉलर के निजी स्तर से बनाए गए बास्केटबाल, जिम्नास्टिक के लिए ''सुपर–डोम'' किसी अन्य आयोजन के योग्य नहीं थे। और तो और ''रोइंग सेन्टर'' अब कुत्तों के घूमने के कारण ज्यादा लोकप्रिय है।

सियोल 1998

सियोल ओलम्पिक की लागत निश्चित की गयी कीमत से दो बार बढ़कर 1.5 बिलियन डॉलर पहुंच गयी थी। इसके अलावा वह खर्च जो ओलम्पिक बजट में नहीं जोड़ा गया वह ढांचागत निर्माण और लोक निर्माण कार्यों में अलग से खर्च किया गया।

कैलगरी 1988

कैलगरी 1988 की सर्दियों में होने वाले ओलम्पिक बजट 461 मिलियन डॉलर था। लेकिन कुल खर्च हुआ 1 बिलियन डॉलर और कर्ज हुआ 910 बिलियन डॉलर का।

अन्तर्राष्ट्रीय आलम्पिक कमेटी यह दावा करती है कि कैलगरी ओलम्पिक से 90 मिलियन डॉलर का फायदा हुआ है। वहीं कैलगरी ओलम्पिक ऐसोसिएशन का दावा है कि इस ओलम्पिक से 150 मिलियन डॉलर का लाभ हुआ है। लेकिन 1999 में ''ओरेंटो स्टार पत्र के कालमनिस्ट'' थॉमस वाल्कोम इन दावों की सत्यता जानने कैलगरी गए और उन्होंने पाया कि कैलगरी ओलम्पिक सिर्फ और सिर्फ ''घाटा'' ही साबित हुए हैं। ये खेल, संघीय, क्षेत्रीय और म्यूनिसिपल सरकार से प्राप्त छूट के चलते जिसमें खेल स्थल निर्माण भी शामिल है, लाभ का दावा कर सकते हैं।

वे यह भी खुलासा करते हैं कि आयोजन समिति के आंकड़ों में यह खर्च शामिल नहीं है जो 98 मिलियन डॉलर की लागत से बनने वाले ''ओलम्पिक सेडलडम स्टेडियम सहित इन खेल सुविधाओं वाली अन्य दूसरी इमारतों पर खर्च किया गया था। इन अन्य इमारतों में 72 मिलियन डॉलर से ओलोम्पिक पार्क, स्काई जम्प, 5.9 मिलियन डालर से स्कीइंग सुविधाएं और 266 ब्लाकों वाले ''मीडिया विलेज'' आदि शामिल हैं जो बाद में बेकार साबित हुए।

साल्ट लेक सिटी 2000

साल्ट लेक शीतकालीन ओलम्पिक के लिए अमेरिकन करदाताओं को करोड़ों डॉलर की ''सब्सिडी'' दी गयी लेकिन बाद में उनके लिए 155 मिलियन डालर का घाटा साबित हुआ। खेलों की कुल कीमत 3 बिलियन डॉलर तक पहुंची। खेलों के बाद उटाह प्रदेश में टैक्स (का आदायगी स्तर) इतना नीचे गिर गया कि सरकार ने 155 मिलियन अमेरिकी डॉलर की कमी दर्ज की और बाद में ''इमरजेन्सी फंड'' से पैसा निकाला गया और किश्तों में धीरे–धीरे खर्च किया गया।

ऐथेन्स 2004

2004 के ऐथेन्स ओलम्पिक को अब तक के इतिहास के सबसे खर्चीले खेल आयोजन का दावा करते हैं। इन खेलों की 1997 में जो निविदा थी उसकी कीमत 1.3 बिलियन डॉलर थी जो कि धीरे–धीरे सन 2000 में 5.3 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। अप्रेल 2001 में वित्त मंत्री ने इस लागत को बढ़ाकर 6.2 बिलियन डॉलर कर दिया। जेकिन कुल खर्च की गयी रकम 15–20 बिलियन डॉलर थी जो कि अनुमानित लागत से दुगुनी से ज्यादा थी। और ये कीमत तब थी, जबकि इस कीमत में ढांचागत निर्माण पर खर्च किए गए धन को नहीं जोड़ा गया।

लेकिन कुल लागत इन खेलों की 15 बिलियन डॉलर से 20 बिलियन डॉलर पहुंच गयी जो कि कुल प्रारम्भिक लागत और वास्तविक कीमत से दुगुना था और उस खर्च की गयी कीमत में बहुत से ढांचागत निर्माण की कीमत शामिल नहीं की गयी थी।

ग्रीक सरकार ने यातायात सुविधाओं और खेल स्थलों पर पानी की तरह पैसा बहाया जिससे कुल लागत को बढ़ा दिया था। इस ओलम्पिक के लिए बड़े स्तर के सुरक्षा इंतज़ाम किए गए थे जैसे सेना के जवानो ने इसे युद्ध क्षेत्र पेट्रोलिंग (निरीक्षण) क्षेत्र बना दिया साथ ही सुरक्षात्मक सर्विलांस कैमरे लगाये गये थे जिनका कुल खर्च 2 बिलियन डॉलर था।

यह बेतहाशा खर्च बाद में 1.66 बिलियन डॉलर के कर्ज का कारण बना जिसे एथेन्स के करदाताओं को कम से कम एक दशक तक भुगतना पड़ेगा। इसमें वह घाटा भी जोड़ना चाहिए जो कि ओलम्पिक के चलते पर्यटन में आयी कमी के कारण हुआ।

भारी कर्ज और विकास की धीमी गति के चलते एथेन्स की अर्थव्यवस्था पतन की ओर है। बहुत से खेल सुविधाएं जो निर्मित की गयी थी वे पैसा बहाने का ही जरिया बनी क्योंकि बाद में उनकी कोई ज़रूरत नहीं पड़ी। लगभग 36 प्रस्तावित ओलम्पिक स्थल अब खाली पड़े हुए हैं। इन खाली पड़े स्टेडियमों का खर्च प्रतिवर्ष 100 मिलियन यूरो डॉलर आता है। और एथेन्स के निवासी पूछ रहे हैं कि इस खेल के लाभ की कीमत उनसे कितने समय तक वसूली जाएगी। एथेन्स जैसे शहर में भी, जहां ओलम्पिक का जन्म हुआ।

वर्तमान सरकार के अनुसार मुख्य स्टेडियम काम्प्लेक्स सहित इन सारे खेल स्थलों के रख–रखाव को हर साल लगभक 1.38 मिलियन डालर खर्चा आएगा। यहां तक की माउंट पारनिथा, जहां 10,500 एथेलिट रहते थे आज ''भूतिण्या'' शहर के नाम से जाना जाता है और जो नौकरियां उस समय वहां पैदा हुई थी आज वो लुप्त हो गयी हैं। इन खेल स्थलों पर सैनिक गार्डों की नियुक्ति की गयी है वहीं इन स्थलों पर किसी और तरह के प्रयोग के लिए कोशिश की जा रही है।

बीजिंग 2008

बीजिंग 2008 के ओलम्पिक के लिए शायद अद्वितीय ओलम्पिक एथेन्स ओलम्पिक से भी आगे जाकर लगभी 40 बिलियन डॉलर खर्च करेगा। इसकी प्रारम्भिक ''ओपरेटिंग बजट'' 1.609 बिलियन डॉलर है। लेकिन नए एक्सप्रेसवे, आधुनिक स्टेडियम, और खेल सम्बन्धी अन्य ढांचागत निर्माण के

चलते इन खेलों की कीमत बढ़ चुकी है। 2008 तक बीजिंग ने 2 बिलियन डॉलर खेल स्थलों के लिए, 2 बिलियन डॉलर कार्यवाहियों के लिए 24.2 बिलियन डॉलर ढांचागत निर्माण के लिए और 7 बिलियन डॉलर वातावरण और पर्यावरण की साफ सफाई के लिए निर्धारित किए हैं।

लंदन 2012

लंदन ओलम्पिक 2012 के ओलम्पिक के लिए प्रारम्भिक लागत 1.5 बिलियन पउंड रखी गयी है। फिर भी मीडिया के अनुसार इसकी लागत 12 बिलियन पोंड तक बढ़ सकती है। निविदाधारकों ने दावा किया है कि ये खेल बड़ा लाभ कमाएंगे और इस बात पर ज़ोर दे रहे हैं कि वे सरकार से 2.5 बिलियन पौंड की सरकारी सब्सिडी (छूट) चाहते हैं। लंदन के करदाताओं को चेतावनी दे दी गयी है कि अगर खेलों के लिए बजट बढ़ता है तो उससे लिए जाने वाले कर का कोई सीमा निर्धारित नहीं है यानि उन्हें वह वहन करना ही होगा। तत्कालिक ''फंडिंग'' समझौते के तहत लंदन के मेयर और सरकार ने खेलों की कीमत बढ़ने पर ''नेशनल लॉटरी'' और लंदन के करदाताओं से वसूलने का फैसला किया है।

राष्ट्रमंडल खेल

उच्चे स्तर के ओलम्पिक खेलों की तुलना में, आर्थिक प्रभाव के विश्लेषण के लिए ओलम्पिक से कुछ कमतर लेकिन उससे सम्बन्धित खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों के लिए जो भी दस्तावेजों से जानकारी प्राप्त होती है वह बेहद कम है। 1930 में हेमिल्टन में हुए पहले राष्ट्रमंडल खेलों में जानकारी के अनुसार डॉलर 45000 खर्च हुए। 1986 के ईडनवर्ग राष्ट्रमंडल खेलों की कीमत 14 मिलियन डॉलर थी और प्रत्यक्ष रूप से 4.3 मिलियन डॉलर का घाटा उठाना पड़ा। इसी तरह इन खेलों के लिए ऑकलैण्ड ने 1990 में 54 मिलियन डॉलर और मैनचेस्टर में 1200 मिलियन डॉलर खर्च किए गए।

मैनचेस्टर 2002

मैनचेस्टर राष्ट्रमंडल खेलों का वास्तविक बजट 1994 में 156 मिलियन डॉलर था। फिर भी 1.2 बिलियन डॉलर की रकम खर्च की गयी। विज्ञापनों और टिकटों से सरकारी आय होने की जो आशा थी वह धरी की धरी रह गयी। सन 2002 से मैनचेस्टर आरक्षित बचत और भूमि बिक्री से घाटा पूरा कर रहा है। वहीं मैनचेस्टर एयरपोर्ट पर किए गए निवेश के माध्यम से भी लाभ पूरा करने की कोशिश कर रहा है।

मेलबार्न 2006

सन् 1998 में राष्ट्रमंडल खेलों के लिए जो प्रारम्भिक निविदा में 195 मिलियन डॉलर खर्च प्रस्तावित था लेकिन 1999 तक (अन्त तक) बजट 400 मिलियन डॉलर पहुंच गया था। सबसे ज्यादा बुरा तो यह हुआ जब अप्रैल 2003 में राज्य सरकार ने खुलासा किया कि खेलों के लिए 1.1 बिलियन डॉलर पहुच गया है। शुरू से लेकर तब तक कीमत दुगुनी हो चुकी थी जिसमें स्वागत और समापन समारोह के लिए कीमत 30 मिलियन डॉलर और 20 मिलियन डालर रखी गयी थी। सबसे बड़ा खर्च मेलबार्न क्रिकेट मैदान पर खर्च किया गया जिसे मुख्य स्टेडियम का दर्जा दिया गया और कुल 338 मिलियन डालर खर्च किए गए। करदाताओं का धन खेल सुविधाओं को ज्यादा साहुलियतें प्रदान करने में खर्च किया गया। आयोजकों ने हजारों मिलियन डॉलर राज्य और संघीय सरकार

की पुलिस (सुरक्षा दस्ते), सेना के जवानों, एयरक्राफ्ट सुरक्षा और हज़ारों निजी सुरक्षा गार्ड, सुरक्षा के लिए नियुक्ति पद खर्च किए जिससे बजट काफी बढ़ गया।

एशियन खेल

दिल्ली में 1982 के एशियन खेलों के लिए ढांचागत निर्माण और खेल सुविधाओं के लिए जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, तालकटोरा स्टेडियम, इन्दिरा गांधी इनडोर स्टेडियम, यमुना बेलोड्रम और करनी सिंह शूटिंग रेंज बनाए गए थे। इन एशियन खेलों के दौरान ही रिंग रेलवे का विकास और उपशहरी क्षेत्रों केंटोनमेंट की शुरूआत हुई। एशियाड गांव, तीन होटल (कनिष्क, मुगलशेरेटन, ताजपैलेस) और इन खेलों के लिए चार ''फ्लाईओवर'' बनाये गये थे। उसी समय खिलाड़ियों के लिए बनने वाली इमारत कभी पूरी नहीं हो पाई जिस वी.आइ.पी. का दर्जा दिया गया था। और न ही तालकटोरा स्टेडियम इन्दिरागांधी इन्डोर स्टेडियम की छत भी कभी अच्छी तरह से काम में लायी जा सकी।

इन में से कोई भी सुविधाएं पूरी तरह से प्रयोग में नहीं लायी जा सकी जैसे की योजना बनायी गयी थी। 7–10000 मिलियन जो इन खेलों के लिए खर्च किए गये थे, बदले में 60 मिलियन रु. टिकट बिक्री और 150 मिलियन रु. ''आपरेशनल'' कीमत'' तक ही सरकारी आय प्राप्त हो पायी। यहां तक की खेलों के बाद ज्यादातर खेल सुविधाएं अनुपयोगी हो गयी। इन्दिरा गांधी 'इन्डोर' स्टेडियम की छत का टपकना और सीलन लगातार जारी है।

शूटिंग रेंज राज्य की पूरी अनदेखी और रखरखाव के अभाव को झेल रहा हैं रिंग रेलवे कभी भी अपनी पूरी क्षमता से दौड़ नहीं पायी और न तो बहुत से स्टेडियम और होटल जैसा कि बताया गया है, पूरी तरह से प्रयोग नहीं हो पाते हैं। एथलीट और दर्शकों के लिए बहुत ही उच्च स्तर की आवास की आवश्यकता थी। एशियन खेलगांव के ''डिजायन'' का उद्देश्य ''इन्टरलाकिंग हाउसिंग'' की तर्ज पर निर्माण करना था। 1982 में सरकार ने विदेशी धन प्राप्त करने के लिए एशियन गांव के ''अपार्टमेन्टस'' को अनिवासी भारतीयों को बेचने की योजना बनायी। फिर भी ज्यादा अच्छा नतीजा नहीं निकला। अन्त में लोक विभाग की कम्पनियों ने इनमें से ज्यादातर भवनों को खरीदा।

पूरा ब्यौरा

ऐसा देखा गया है कि कोई भी बड़ा आधुनिक खेल कभी भी पैसा नहीं निकाल सका है जबकि इन खेलों में आम जनता का पैसा लगता है। वहीं ज़मीन का और लोगों का स्थानांतरण, ढांचेगत (Infrastructure) निर्माण की कीमत, और सुरक्षा व्यवस्था जैसे तत्व शामिल रहते हैं। जयादा पैसा बनाने के चक्कर में ज्यादातर देश कर्ज में डूब जाते हैं। और इस कर्ज की अदायगी उस देश का आम नागरिक बड़ी हुई कीमतों को सालों तक झेलकर राज्य सरकार को अदा करता है।

मेजबान शहर अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक कमेटी (IOC) के साथ एक कान्ट्रेक्ट पर दस्तखत करता है कि वे इन खेलों का बजट पर की ज़िम्मेदारी लेंगे। फिर भी (IOC) लाभ में से किसी मध्यस्थ की तरह 10% लेती है। इस तरह सारे नियम खेलों, को बढ़ावा देने वालों को साहूलियत देने के लिए बनाए जाते हैं जैसे लाभ का निजीकरण और कम समाजीकरण खेलों की कीमत पर ''पब्लिक फंड'' की अदायगी की जाती है। लेकिन इन तथ्यों की जानकारी जनता को कम ही दी जाती है। हर बड़े खेल आयोजन का सच तो यह है कि इसमें सारे तथ्य चाहे वे 'सब्सिडी' हो, अनियमित खर्च हो या बड़ी ब्रान्डिंग कार्यवाही, सब कुछ जनता से छुपाया जाता है।

बड़े खेलों की सामाजिक और पर्यावरणीय कीमत

बहुत बड़े वित्तीय बोझ के अलावा बड़े खेल शहर के नागरिकों को बड़े आबादी के लिए सामाजिक और पर्यावरणीय बोझ होते हैं।

- कर्ज की अदायगी बड़े और महत्वपूर्ण सामाजिक कार्यों को स्थगित करा देती है। जबकि करोड़ों खर्च किए गए धन को शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य जनसामाजिक कार्यों में खर्च कर वापस कराया जा सकता था।
- कम समय के भीतर ही बड़े स्तर का निर्माण कार्य शहरी योजनाओं और पर्यावरण प्रबन्धन के लिए खतरा बन जाते हैं।
- ये खेल बड़े स्तर पर मानवाधिकार हनन का भी कारण बनते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया और पर्यटकों के लिए "हरित शहर" की योजना के चलते सरकार सड़कों पर रहने वाले और अस्थायी निवासियों को बेदखल कर देती है। और किसी भी तरह के विरोध और प्रदर्शन को निर्दयता से दबा दिया जाता है।
- खेलों के बाद शहरी ज़मीन और आवासों की कीमत बढ़ जाती है।
- और इन सबसे बड़कर ये खेल विशेषाधिकार सम्पन्न नागरिकों और शहर के आम आदमी के बीच की खाई को चौड़ा कर देते हैं।

शहर की सफाई

1936 ओलम्पिक से पहले बर्लिन में नाजी शासन के दौरान शहर की गलियों से गरीबी के सभी चिन्हों को मिटाने का अभियान चलाया गया था। बेघर लोगों और उन लोगों को जो आस–पास के इलाकों में गरीबी स्तर पर जीवन जी रहे थे उन्हें उनके घरों से बेदखल किया गया ताकि अर्न्तराष्ट्रीय समुदाय के बीच शहर की अच्छी "इमेज" पेश की जा सके। यह खेलों के लिए बर्लिन का पतन था।

इस तरह के अभियान सिर्फ एक "बुरे राज्य" में ही नहीं बल्कि आज भी चलाए जाते हैं। सभी मेजबान शहरों में खेलों के लिए इमारतों, सफाई और सौन्दर्यीकरण के नाम पर उन गरीब लोगों को जो इन इमारतों को बनाने में अपना पसीना बहाते हैं, उन्हें उनके घरों से निदर्यतापूर्ण तरीके से बेदखल कर दिया जाता है। "सेन्टर ऑन हाऊसिंग राइटिंग एंड इविक्शन" (COHRE) के द्वारा किए गए शोध में ये बात जाहिर होती है कि बेदखली के ज्यादातर मामलों का सीधा ताल्लुक इन खेलों से है।

इन आयोजनों से पहले पुलिस गलियों को साफ करने के नाम पर बेघर लोगों, स्ट्रीट वेन्डरों, अनौपचारिक कामगारों, झुग्गियों और अन्य दिखायी देने वाले गरीबी के चिन्हों को नष्ट करने का काम करती है। वर्तमान इतिहास में सभी मेजबान शहरों जैसे अटलांटा, लॉस एंजेल्स, सिओल, क्वालालाम्पुर, बीजिंग और दिल्ली में बड़े स्तर पर "क्लीनिंग आपरेशन" चलाए गए। और यह सब शहरी नवीनीकरण कार्यक्रम के तौर पर किया गया।

आलोम्पिक

सियोल 1988

सियोल ओलम्पिक वास्तव में 1985–1988 के दौरान बेघर गरीबों और गरीब मकानमालिकों को सरकारी आदेश से बाहर करने का बड़ा उदाहरण है जिसके चलते 7,20,000 लोगों को सौन्दर्यीकरण और स्टेडियम तथा ओलम्पिक गांव की सुरक्षा के नाम पर बड़ी बेरहमी से बेदखल कर दूसरी जगहों पर भेज दिया गया। बिना किसी सूचना के पुलिस बल ने कई परिवारों पर हमला बोल दिया था। स्ट्रीटवेन्डरों को अधिकारियों और गुण्डों द्वारा निकाल कर बाहर कर दिया गया।

वार्सिलोना 1992

शहर ने हज़ारों लोगों की बेदखली का दौर झेला। एक विशेष अध्यादेश बनाकर बेघर लोगों का खाली इमारतों में सोना अवैध करार दिया गया। तमाम काश्तकार और छोटे व्यापारी जबर्दस्ती शहर से बाहर कर दिये गये थे। शहर में झुग्गी बस्तियों को ढकने के लिए दीवार बनायी गयी ताकि मैराथन मार्ग से टी.वी. कैमरे की नज़र उन पर न पड़े।

अटलांटा 1996

यही प्रक्रिया अटलांटा में अपनायी गयी। खेलों के आयोजन के लिए 5000 सार्वजनिक घरों को ढहा दिया गया और लगभग 30,000 शहर के गरीब लोगों को हटा दिया गया ताकि ओलम्पिक स्थलों का निर्माण हो सके। इससे भी ज्यादा 9,000 बेघर लोगों को गलत तरीके से गिरफ्तार किया गया। 8 महीनों के दौरान गिरफ्तार किये गये ज्यादातर लोग अफ्रीकन अमेरिकन थे। और सिर्फ दो हफ्तों के खेलों के लिए बेघर गरीब लोगों को 300 किलोमीटर दूर भेज दिया गया।

एक विस्तृत "स्ट्रीट स्वीपिंग" अभियान चलाया गया जिसके "प्रोजेक्ट होमवार्ड वाउनड" के अनुसार बेघर लोगों को एक तरफ का टिकट दिया गया कि वे अपने परिवार को कहीं भी ले जाए और नौकरी ढूंढे। उनसे एक काग़ज पर दस्तखत कराये गये कि वे कभी वापस नहीं आएंगे।

सिडनी 2000

सिडनी ओलम्पिक भी बेघर करने के खेल के कारण याद किया जाता है। चार साल पहले अटलांटा की तर्ज पर सिडनी में भी बेघर लोगों के लिए "Gateway" आपरेशन चलाया गया। यह सब आस्ट्रेलिया और सिडनी को सालों के लिए मुख्य पर्यटन स्थल बनाने के नाम पर किया गया। रेडफर्न के गरीब निवासियों को ओलम्पिक स्थलों को और सुन्दर बनाने के लिए हटा दिया गया था।

खेलों से दो साल पहले कानूनों की एक श्रंख्ला पारित की गयी जिसका असर गरीब बेघर लोगों की गतिविधियों और उनके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले सार्वजनिक स्थलों पर पड़ा।

पुलिस को गलियों से घुमक्कड़ों को हटाने के निर्देश दिए गये थे। सिडनी सिटी रेन्जर और सुरक्षा गार्ड की टोलियां स्थानीय स्तर पर तैनात की गयी और ओलम्पिक अधिकारियों को किसी भी तरह की आम गतिविधि रोकने के लिए नये अधिकार दिये गये हैं।

एथेन्स 2004

2004 के एथेन्स खेल वास्तव में वहां के रोमा समुदाय को (सामान्यतः जिन्हें जिप्सी समुदाय कहा जाता है) हटाने और बेदखल करने का बहाना बन गए। हालांकि "ग्रेटर एथेन्स एरिया" में जहां ये लोग रहते थे, उस भूमि को खेल सम्बन्धी निर्माण के लिए अधिकृत नहीं किया गया था।

हालांकि शुरू में तो सरकारी तंत्र ने इस समुदाय के साथ एक समझौता किया कि उस ज़मीन के बदले में जहां वे बेदखल किए जा रहे हैं, उन्हें उचित ज़मीन और मुआवज़ा दिया जाएगा। इस समझौते पर अगस्त सन 2002 में मेअर और रोमा समुदाय के प्रतिनिधि ने दस्तखत किए।

लेकिन एक स्थानीय संगठन ग्रीक हेलसिनकी मॉनीटर की रिपोर्ट के अनुसार रोमा परिवारों के एक बहुत बड़े भाग को जो कि जबर्दस्ती बेदखल कर दिए गए थे, उनका न तो उचित पुनर्वास हुआ और न ही मुआवजा मिला। बहुत से स्थानीय और अन्तर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों जैसे COHRE ने अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक कमेटी से इस सम्बंध में दखल देने को कहा कि किसी भी तरह का अन्याय न होना सुनिश्चित होना चाहिए। लेकिन इस सम्बंध में कुछ भी नहीं किया गया।

बीजिंग 2008

बीजिंग ने तो रिकार्ड ही तोड़ दिया जब यह आने वाले 2008 में होने वाले ओलम्पिक के लिए गरीबों को शहर से हटाया गया। 500,000 शहर निवासियों को लगभग वाशिंगटन डी.सी. की जनसंख्या के बराबर, गरीब लोगों को शहर की तैयारी के नाम पर बेदखल किया जा रहा है। इन लोगों को बदले में कम हर्जाना दिया गया या बिल्कुल नहीं दिया गया।

COHRE जैसे मानवाधिकारवादी संगठन और एमनेस्टी इन्टरनेशनल के अनुसार बड़े स्तर के निर्माण कार्य के लिए जैसे होटल, शापिंग सेन्टर और स्काइक्रेपर बनाने के लिए, बीजिंग में आस–पास के इलाके को नष्ट कर दिया गया। इनमें ज्यादातर पुराने इलाकों, गलियों और पुराने तरीके से बने हुए मकान को जैसे हुटोन्ग (परम्परागत चीनी ढंग से बने हुई सड़कें और गलियां) जिनमें लोग सदियों से रहते आ रहे थे। COHRE की नई रिपोर्ट के अनुसार 1.25 मिलियन लोगों को पहले ही हटा दिया गया है और "ओलम्पिक सम्बन्धी विकास" के चलते खेलों से पहले लाखों लोगों के बेदखल होने की आशा है।

मकानों का यह ध्वस्तीकरण कुछ दिन पहले नोटिस देकर दिया गया और कहीं–कहीं तो सूचित ही नहीं किया गया। यदि किसी व्यक्ति के घर के दरवाज़े पर "चाय" चिन्हित होता है तो इसका मतलब है कि इसे ध्वस्त किया जाएगा और यदि नहीं तो भी घर गिरा दिए गए हैं।

"रियल स्टेट" और कीमतों में वृद्धि ने सरकार और ठेकेदारों के बीच शहर के केन्द्रीय भाग को विकसित करने को लेकर "लूट" को बढ़ावा दिया है।

यह परिणाम है चीन के "व्यक्तिगत सम्पत्ति अधिकार कानून" के तहत जिसके चलते लोगों को आवास के मुद्दे पर सीमित बोलने का अधिकार है। यह ठेकेदार को बिना विरोध के मकानों और "हूटोन्ग" को नष्ट करने की इजाजत देता है। वे नागरिक जो अपना मकान और व्यापार खो चुके हैं वास्तव में शहर अधिकारियों और धनी ठेकेदारों को मिलीजुली ताकत के आगे बेबस हैं। मानवाधिकार निरीक्षण की रिपोर्ट के अनुसार "जब लोग अपने मुकदमें को लेकर कोर्ट जाते हैं तो वे पाते हैं कि सब तो पहले ही अधिकारियों और ठेकेदारें के हाथ बिक चुका है। कभी कभी घर उस समय सीमा से पहले ही तोड़ दिए जाते हैं जो समयसीमा न्यायधीश द्वारा सुनवाई के लिए तय की गयी थी। बहुत सी शिकायतें ऐसी भी हैं जिनसे ये सिद्ध होता है कि आवासों को गिराने के दौरान लोगों के घायल और मरने की घटनाएं भी हुई हैं।

लगातार निराशा के दौर से गुज़र रहे लोगों के विरोध ने ज़ोर पकड़ा है। एमनेस्टी इन्टरनेशनल की 2004 की वार्षिक रिपोर्ट यह दर्शाती है कि बेदखल किए गए और हटाए गए लोगों की अगुवाई में विरोध प्रदर्शन लगातार बढ़े हैं। ऐसे भी मामले हुए जब तियानामेन में बेदखल किए गए लोगों ने आत्मदाह तक किया। याचिकाएं और इन्टरनेट विरोध लगातार चल रहा है।

बैकूबर 2010

बेकूबर में 2010 के शीतकालीन आलम्पिक के लिए भी शहर के पूर्वी भाग की ओर विकास के लिए दबाव के संकेत साफ दिख रहे हैं। यह खतरा कम लागत से बने आवासों पर मंडरा रहा है। यह वैसा ही है जैसा बैकूबर में EXPO 86 विश्व मेले के दौरान हुआ था जब गरीब लोग शहर से बाहर फेंके जा रहे थे।

राष्ट्रमंडल खेल

क्वालालाम्पुर 1998

क्वालालाम्पुर में राज्य सरकार ने शहर में होटलों कंडोमिनियम, और विश्व की सबसे ऊंची इमारत का गौरव प्राप्त करने वाले Patronage tower बनाने के लिए बहुत बड़ा बेदखली कार्यक्रम चलाया ताकि शहर को खूबसूरत और "अपग्रेड" किया जा सके।

दिल्ली 2010

ठीक इसी तर्ज पर ऐसी जानकारी मिली है कि दिल्ली पुलिस ने भिखारियों और असहायों से शहर और शहर की गलियों को मुक्त रखने की विवादास्पद योजना बनायी है। यह योजना 2010 "कॉमनवेल्थ" खेलों के लिए बनायी है। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा तैयार करायी गयी सरकारी रिपोर्ट में यह सिफारिश की गयी है कि खेलो के लिए भिखारियों को रोकने के लिए विशेष पुलिस दस्ता बने और डिटेंशन केन्द्र बनाए जाएं ताकि शहर की साफ छवि पेश की जा सके।

जनता को बुराई के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए जिसका

परजीविता को बढ़ावा देना और उन्हें हतोत्साहित करना जो मेहनत करते हैं। भीख मांगना दिल्ली में पहले से ही अवैध घोषित हो चुका है। जो कोई भीख मांगते हुए पकड़ा जाएगा उसे भिखारियों की अदालत में जाने से पहले 12 भिखारी आवासों में से किसी एक में रखा जा सकता है। ये आवास बेघरों के लिए आवास कम और जेल ज्यादा प्रतीत होती है। वर्तमान में ये कानून बराबर प्रयोग में लाया जा रहा है। दिल्ली भिखारी आवास में 3600 लोगों के रहने के लिए हैं लेकिन उसमें 1400 लोग ही रखे गए। और ज्यादा आवास बनाने होंगे अगर 2010 तक 60,000 शहर में भिखारी हुए तो।

वहीं 1980 के दिनों की तरह ही सड़कें, होटल, स्टेडियम बनाए जा रहे हैं, प्रदूषित यमुना को साफ किया जा रहा है। दिल्ली के बहुत से चिर–परिचित दृश्य गायब किए जा रहे हैं।

स्टालों (ठेलों) पर बिकने वाले भोजन को बन्द कर दिया गया है। बन्दरों को पकड़कर पिंजरों में बन्द किया जा रहा है। और हज़ारों पवित्र गायों को डेयरी काम्प्लेक्स में देने की योजना है।

हज़ारों छोटे उद्योग पहले ही बन्द कर दिए गए हैं। छोटी दुकाने और स्टोर्स बन्द कर दिए गए। रिक्शा, साइकिल शहर की कई गलियों में प्रतिबन्धित कर दिया गया है। "स्ट्रीट वेन्डरिंग" पर पाबंदी लगा दी गयी है। और हज़ारों झुग्गीवासियों को उजाड़कर शहर से दूर भेजा जा रहा है। 40,000 परिवारों के उस जगह से, जहां राष्ट्रमंडल खेल गांव बन रहा है, सन 2004 में निर्दयतापूर्वक उजाड़ दिया गया।

पॉन–अमेरिकन खेल

रियोडि जेने रियो 2007 में होने वाले पॉन अमेरिकन खेलों की तैयारी के लिए 300 झुग्गियां हटा दी गयी हैं। उन झुग्गियों में रहने वाले गरीब परिवारों के लिए, अपराध की उपस्थिति बढ़ने के कारण पुलिस द्वारा (गिरफ्तार करना) आम बात हो गयी है। रियोडि जेनेरियों के लोक सुरक्षा मंत्री जोस मैरियानों ने इन झुग्गियों को, जिन्हें "केविलास" कहा जाता है हटाने वाले "एक्शन प्लान" का बचाव किया। उन्होंने चेतावनी दी कि उन सड़कों पर शान्ति बनाए रखने के लिए जो प्रायः खूनी हो जाती है, और जिनकी वजह से ये होता है उन गरीब लोगों के खिलाफ, सेना, पुलिस, सिविल और राष्ट्रीय सुरक्षा पुलिस की नियुक्ति की जा रही है।

एशियन खेल

दिल्ली 1982

दिल्ली में 1982 में एशियाड खेलों के लिए निर्माण कार्य और 1962 के मास्टर प्लान के लिए लाखों मज़दूरों और कामगारों की आवश्यकता थी जिन्हें निर्धारित मजदूरी से कम मजदूरी दी जाती थी और न ही किसी जगह किसी तरह की आवास सुविधा दी गयी थी, इन प्रवासियों के साथ हिंसात्मक रवैया अपनाया गया। लोगों को प्रायः बलपूर्वक झुग्गी बस्तियों में रहने के लिए मजबूर किया गया जिससे शहर में झुग्गियों की संख्या बढ़ गयी। शहर की जनसंख्या इससे 1982 तक 55 लाख से 65 लाख तक हो गयी। तभी से इन्हीं झुग्गियों को यह कहकर हटाया जा रहा है कि ये अवैध और अनियमित तरीके से बनायी गयी है।

एशियन खेलों से पहले, बम्बई भिक्षा निरोधी कानून की तर्ज पर जिसके चलते हजारों लोगों को शहर की गलियों से बेइज्जत कर निकाल दिया गया।

शहर की क्षमता

बेदखली से भी आगे अगर देखा जाए तो खेलों का प्रभाव शहर के मध्यवर्ग पर भी पड़ता है जैसे खेल और खेलों के बाद जगह, ज़मीन और आवास की और किराये की कीमतें बढ़ जाती है। वे क्षेत्र जहां बेहतर सुविधाएं और यातायात व्यवस्थाएं हैं वहां की कीमतें "रियल स्टेट" के मालिकों द्वारा बढ़ा दी जाती हैं। सामान्यतः सार्वजनिक और कम कीमतों वाले निजी आवासों को चुनिन्दा क्षेत्रों से बाहर कर दिया जाता है। कम कीमतों वाले होटल और मकान मालिकों को बड़े पर्यटन होटल बनाने के नाम से हटा दिया जाता है ताकि ज्यादा पैसा कमाया जा सके और इसके लिए कुछ नियम या कानून लागू किए जाते हैं जैसे बेदखली, कीमतें बढ़ा देना, किराया अचानक बढ़ जाना और स्थायी आवासों को अस्थायी होटल आवासों में तब्दील कर दिया जाता है।

खेलों की आयोजन कमेटी हमेशा यह कहती है कि पर्यटकों और खिलाड़ियों के लिए बनने वाले आवास खेलों के समापन के बाद फिर से आम जनता के लिए सार्वजनिक आवासों के तौर पर उपलब्ध होंगे। फिर भी सवाल यह है कि दिए गए क्षेत्र में "रियल स्टेट" मालिकों ने शहर में जो आवास बनाए हैं वे बेहद महंगे होने के कारण आम जनता को कैसे उपलब्ध हो सकते हैं।

वास्तव में जीवन की औसत कीमत का (living cost) निजीकरण कर दिया जाता है जैसे : भोजन, यातायात, और मौलिक साहूलियतें

और दूसरी आवश्यक चीजों के दाम उच्च स्तर पर बढ़ा दिए जाते हैं। सभी सस्ते विकल्प हटा दिए जाते हैं।

इसी से सम्बन्धित कुछ उदाहरण आगे दिए जा रहे हैं।

ओलम्पिक

कैलगरी 1988

1987 और 1988 शीतकालीन ओलम्पिक के लिए ज़मींदारों की बाहर से आने वाले पर्यटकों और दर्शकों को ऊंचे दामों पर आवास देने की इच्छा पूरी करने के लिए हजारों काश्तकारें को शहर से बाहर खदेड़ दिया गया।

वार्सिलोना (1992)

1988 से शहर के आवासों की कीमत और किराये में क्षेत्रीय कीमतों की तुलना में, बहुत ज्यादा वृद्धि हो गयी। और मुद्रा स्फीति की दर में 1% की वृद्धि हो गयी। ओलम्पिक खेलों के निर्माण को प्राथिमिकता देने के कारण सार्वजनिक आवास कार्यक्रम को सीमित कर दिया गया। खेलों के कारण 5 साल तक आवासों की कीमत 131% प्रतिशत तक ऊंची हो गयी थी।

1986 और 1992 के बीच पुराने और नए आवासों की बाजार कीमत 240 प्रतिशत और 287 प्रतिशत बढ़ गयी। 1984 और 1992 के बीच लगभग 59000 से ज्यादा लोग वार्सिलोना छोड़ कहीं और रहने लगे। इस शहर की तथाकथित सफलता की कहानी में भोजन और आवास की, यातायात और सेवाओं की आसमान छूती कीमतें भी शामिल हैं।

अटलांटा (1996)

1996 अटलांटा ओलम्पिक के लिए आवास और नीतियों के क्रियान्वयन में आम आदमी और काश्तकारों के साथ बहुत भेदभावपूर्ण रवैया अपनाया गया। निजीकरण और पर्यटकों के लिए आवास की व्यवस्था करने के कारण निजी वस्तुओं के बाजार में वृद्धि हो गयी। बहुत से स्थानीय निवासी जो इन बढ़ी कीमतों को वहन नहीं कर पाए बेदखल कर दिए गए।

शहर के नागरिकों को हटा दिया गया जब ज़मीन के मालिकों ने उच्च दरों की कीमत खर्च करने की ताकत रखने वाले लोगों को देखते हुए शहर के बीच फ्लैट बनवाने और उन्हें सुधारना शुरू किया। इस तरह अच्छी तरह बसे हुए आवास मध्यवर्ग के लिए भी महंगे हो गए। 1996 खेलों के चलते 5 साल में ही आवास की कीमत 19% तक बढ़ गयी। इस की तुलना में अटलांटा के राज्य जार्जिया और अमेरिका में इसी काल में 13% की वृद्धि हुई थी।

साल्ट लेक सिटी (2000)

साल्ट लेक सिटी 2000 शीतकालीन ओलम्पिक के दौरान नए आवास की कीमतों में वृद्धि कर दी गयी। बहुत से ज़मीदारों ने सारे शहर की कीमतों को "हाइक" कर आवासों और किराए की कीमतों में वृद्धि कर दी और आने वाले पर्यटकों और मेहमानों को बढ़ी हुई कीमतों के नए आवास मुहैया कराने के लिए वहां के काश्तकारेां को बेदखल कर दिया गया। यह इसलिए किया गया क्योकि "उटाह" राज्य ने कानून बनाकर जमींदारों को ये अधिकार दे दिया कि उस व्यक्ति को जिस पर 15 दिन का किराया बाकी है उसे बिना कोई कारण बताए बेदखली का नोटिस 15 दिन पहले भेजा जा सकता है। हालांकि बेदखल लोगों को थोड़ी से वैध आवास की सुविधा दी गई।

सिडनी 2000

ओलम्पिक की तैयारी के लिए सिडनी में भी 1990 के बीच से ही आवासों की कीमतों में जबर्दस्त वृद्धि हुई। सिडनी के अन्य क्षेत्रों में 50% वृद्धि की तुलना में "होम बसवे", जो कि केन्द्रीय सिडनी से 20 मिनट की दूरी पर है ओलम्पिक स्थलों के निर्माण के चलते आवासों की कीमत 70% तक बढ़ गयी। जबकि सिडनी के दूसरे भागों में भी 50% की वृद्धि हुई।

House prices in syndeny in the lead op to the 2000 oloypics

इसी दौरान सिडनी में रहने वाले गरीब काश्तकारों के लिए मुश्किलें भी मेहमान बनकर आयी। क्योंकि खेलों के कारण किराये की दर बढ़ गयी और सस्ते कमरों और "गेस्ट हाऊस" ढहा दिए गए और रहने वाले बेदखल कर दिए गए। मार्च 2000 से पहले 12 महीनों में शहर के बाहर की जमीन के दाम भी 10% से 30% तक बढ़ गये। काश्तकारों को हजारों रुपये बलपूर्वक देने पड़ते थे (किराये के लिए) और फिर भी अस्ट्रेलिया सरकार की ओर से इनके और इनके आवास की कोई गारन्टी नहीं दी गयी थी। दरअसल ज़मीदारों की मर्जी के लिए ही इन काश्तकारों को बेदखल किया जाता था और उन्हें बिना कोई कारण बताए ही बेदखली का "नोटिस" थमा दिया जाता। लगभग हर दिन 120 बेदखली की शिकायतें मिलती थी। जबकि यह उस सच्चाई से कोसों दूर है क्योंकि वास्तव में रोज इससे ज्यादा बेदखल किए जाते थे।

धर्मशालाओं और छोटी "लॉज" को कोई सुरक्षा नहीं थी। न ही उनके विस्थापन से सम्बन्धित कोई विशेष कानूनी अधिकार प्राप्त थे और यह सब इसलिए किया गया ताकि जमीदार उन जगहों पर अपने आवास बना सके और ओलम्पिक खेलों की वजह से बाजार में आवास बाजार में आए उछाल को भुना सके और लाभ कमा सके। खेलों के बाद भी मकानों की कीमते आसमान छूती रही और किसी के लिए भी उनकी कीमत वहन करना (मध्य और उच्च मध्यवर्ग) मुश्किल था। जबकि किराये की कीमतों में आशातीत वृद्धि हुई।

राष्ट्रमंडल खेल

क्वालालाम्पुर (1998)

क्वालालाम्पुर में आवास की कीमतें 1998 तक पांच सालों में 48% तक बढ़ गयी और पूरे मलेशिया में 40% तक बढ़ोत्तरी हुई। फिर भी 1998 में क्वालालाम्पुर और मलेशिया में कीमतें 9% से ज्यादा तक गिर गयी और आर्थिक संकट झेलना पड़ा।

मेनचेस्टर 2002

खेलों के लिए मेनचेस्टर के केन्द्रीय इलाके में पुनःनिर्माण की वजह से आवास की कीमते उस क्षेत्र में उछाल मारने लगी। 2002 तक तो मेनचेस्टर में आवास की कीमतें 5 सालों तक 102% तक बढ़ गयी। इसकी तुलना में 52% आवास कीमतें उत्तरपूर्व और 83% कीमतें पूरे ब्रिटेन में बढ़ी।

House price in Manchester in leadup to commonwealth games

नौकरियों का बढ़ना (दिवास्वप्न)

इस आर्थिक चमत्कार की मिथ्या अवधारणा के तहत खेलों की बोली लगाने वाले इन खेलों की वजह से खेलों के दौरान और बाद में नौकरियां बढ़ने का दावा करते हैं। लेकिन यह वास्तव में एक भ्रान्ति ही है क्योंकि :

पहला तो ये कि नौकरियों का अनुपात उससे कहीं कम होता है जितना कि बढ़ने का दावा किया जाता है/किया गया है। और उस निवेश की तुलना में तो बहुत ही कम नौकरियां पैदा होती हैं जो अनियमित और बहुत ज्यादा इस बड़े आयोजन के लिए किया जाता है। इन नौकरियों में सबसे ज्यादा संख्या उन स्वयंसेवी युवकों की होती है जो देश के सम्मान और गौरव के चलते ये काम करते हैं और जिसे तथाकथित जांच कहा जाता है। दिल्ली में सरकार ने 17000 स्वयंसेवकों को इस आयोजन (राष्ट्रमंडल 2010) या निरीक्षण में लगाने की योजना बनायी है।

वार्सिलोना ओलम्पिक 1992

इस ओलम्पिक में निवेश 6 मिलियन "यूरो" तक पहुंच गया था। साथी 53ः पब्लिक फंड का भी इस्तेमाल हुआ। लेकिन इस निवेश के बाद भी नौकरियों में कोई खास इजाफा नहीं हुआ। 1987 और 1991 के बीच "कन्स्ट्रक्शन" (निर्माण क्षेत्र में) महज 33000 नौकरियां उत्पन्न हुई और यह उस आशा से बहुत ही कम था जितनी कि आशा थी और ये भी तब जब इस निवेश का ¾ भाग निर्माण क्षेत्र में लगाया गया। होटल और "कैटरिंग" क्षेत्र में भी 22000 नौकरियां उत्पन्न हुई जो कि आशा के बिल्कुल कम थी। इनमें से भी कुछ नौकरियां तो आयोजन के कुछ समय के लिए ही थी।

साल्ट लेक सिटी 2002

उताह राज्य में भी औसत नौकरियां (ओलम्पिक प्रभावी) समय (1996–2001) केवल 37% तक ही थी और यह ओलम्पिक पूर्व समय 1990–1998 की तुलना में बेहद कम थी।

नौकरियों का निर्माण

वास्तव में ये नई नौकरियां उन लोगों से छीनी गयी नौकरियों और व्यवसाय का एक छोटा सा भाग है जो इस आयोजन के चलते बेदखल कर ऐसी जगह भेजे गए जहां न तो कोई रोज़गार की सम्भावना है और न ही पहले जैसी नौकरी में प्राप्त होने वाली सुविधा। ये नई नौकरियां निर्माण का भ्रम उन छोटे धन्धों, व्यापारियों और कामगारों का काम और व्यवसाय बन्द कर फैलाया जाता है।

दिल्ली राष्ट्रमंडल खेल 2010

राष्ट्रमंडल खेल 2010 की तैयारियों के अन्तर्गत सीलिंग आदेश, नए योजना नियम और जोन कानून के चलते स्ट्रीट वेन्डरों, रिक्शाचालकों और छोटे दुकानदारों को बेदखली का दौर झेलना पड़ा है।

अन्त में सबसे महत्वपूर्ण बात ये कि नौकरियां असंगठित क्षेत्रों में अल्पकालिक या "पार्ट टाइम" नौकरी की तरह होती है। नौकरियां का एक बड़ा भाग निर्माण क्षेत्र में होता है जो कि अल्पकालिक होता है। काम को तय समय तक पूरा करने के दबाव के चलते "कन्स्ट्रक्शन" मालिक मजदूरों की सुरक्षा को धता बता देते हैं। उनसे लम्बे समय तक काम लिया जाता है। और उन्हें बिना किसी सुरक्षा के और कम पैसे देकर काम करवाया जाता है।

दिल्ली एशियाड 1982

"प्यूपिल्स यूनियन ऑफ डेमोक्रेटिक राइट्स" द्वारा प्रवासी कामगारों द्वारा एशियन खेलों के लिए किए गए काम के अध्य्यन की रिपोर्ट के अनुसार जो मजदूर निर्माण कार्य के लिए बाहर से लाए गये थे और जो खेल स्थलों पर काम पर लगाये गये थे उन्हें हिंसात्मक परिस्थितयों का सामना करना पड़ा था।

सिडनी ओलम्पिक 2000

सिडनी के "हामवस वे" पर 10 मजदूरों की एक दुर्घटना में मौत हो जाने पर हड़ताल के लिए कहा गया। रेल ट्राम और बस यूनियन ने खेल स्थल पर सरकार द्वारा बनाये जा रहे काम के दबाव के चलते अपनी आवाज उठाई क्योंकि ये काम उन्हें कोई बोनस और हर्जाना दिए बगैर करवाया जा रहा था।

एथेन्स ओलम्पिक 2004

मानवाधिकार संगठनों के अनुसार ओलम्पिक खेलों के लिए बनने वाले अतिआवश्यक और जरूरी स्थलों के निर्माण के दौरान सुरक्षा की अनदेखी के कारण दर्जनों मजदूर मारे गये थे। इन उद्योगों और कन्स्ट्रक्शन निर्माण के लिए बिना किसी कार्यवाही के संघीय यूनियन के तय मानक से आधी (50%) मजदूरी दी जाती थी। 7 दिन काम कराने का एग्रीमेन्ट किया गया था। ठेकेदार मजदूरों को डरा धमकाकर सातों दिन और रोज 12 घंटे से लेकर 19 घंटे तक काम करवाते थे। इन भयावह परिस्थितियों में उनके लिए न तो लॉकररूम थे, न ही शौचालय, एम्बुलेंस और न ही कोई दूसरी मौलिक और अत्यन्त आवश्यक सुविधा और सुरक्षा।

शहर को हरित बनाना

इस तरह के खेल शहर के पर्यावरण से भारी कीमत वसूल करते हैं क्योकि "फास्ट ट्रैक प्लानिंग" के तहत ढांचागत निर्माण की आवश्यकता को देखते हुए एक योजना प्रक्रिया के तहत प्रस्तावों को आगे बढ़ा दिया जाता है और यह सब करने के लिए शहर के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण सम्बन्धी निर्देशों का पालन नहीं किया जाता जो कि होना चाहिए। प्रायः ज्यादातर विकास (निर्माण) नदी क्षेत्र पर किए जाते हैं जिसका अन्त नदी प्रक्रिया की सुरक्षाको खतरा उत्पन्न होने से होता है। आगे कुछ शहरों का उल्लेख किया जा रहा है जहां खेलों से सम्बन्धित विकास के चलते पर्यावरण को काफी नुकसान पहुंचा है।

ओलम्पिक

सिडनी ओलम्पिक को "हरित खेलों" के नाम से जाना जाता था क्योंकि सौर ऊर्जा गांव जैसे प्रोजेक्ट का क्रियान्वयन किया जा रहा था। फिर भी सच्चाई इससे बिलकुल ही अलग थी क्योंकि वास्तव में "वोन्डी तट" के एक तिहाई हिस्से पर वालीबाल स्टेडियम बनाया गया जा सिर्फ 6 महीने ही प्रयोग में लाया जा सका।

सरकार ने 1995 में एक कानूनी प्रस्ताव पास किया जो खेल सम्बन्धी विकास कार्यों को आगे बढ़ा रहे थे। इस कानून ने खेल सम्बन्धी विकास कार्यों को ये शक्ति दे दी कि वे पर्यावरण सुरक्षा सम्बन्धी नियमों की धज्जियां उड़ा सके। यह वह उपलब्धि थी, जिसने सिडनी के लोगों को खेलों के कारण हो रहे विकास कार्य के चलते पर्यावरण सम्बन्धी नुकसान के कारण, इस विकास कार्य के विरोध में अदालती कार्यवाही से वंचित कर दिया।

एथेन्स 2004

एथेन्स में भी उन शहरों की तरह ही सबसे हरित शहर बनाने का दावा किया गया लेकिन यहां बहुत बड़ा पर्यावरणीय नुकसान हुआ क्योंकि यहां जिस स्थान पर खेलों के लिए निर्माण हुआ वह पर्यावरण की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान था। ओलम्पिक गांव "माऊंट पारनिथा" की चट्टान पर बनाया गया जो कि एथेन्स के हरे भरे जंगल का महत्वपूर्ण भाग था। "गलास्टी" के "पिंग–पोन्ग" स्थान पर निर्माण कार्य की सहमति के कारण सारा हरित स्थान उजाड़ दिया गया। "माऊंट इगिटोस" को उच्च क्षमता वाली बिजली की क्षमता पहुंचाने (खेल स्थान पर) वाले स्थान को उजाड़ दिया गया। ओलम्पिक रिंग रोड के भाग के निर्माण के आदेश के तहत किफिसोड नदी को कंकरीटों से पाट दिया गया।

इसके अलावा 8500 पेड़ों को सड़कों के विस्तार के लिए काट डाला गया। इस विध्वंस को देखते हुए "ग्रीनपीस" और "वर्ल्ड वाइल्डलाईफ फंड" जैसे संगठनों ने, जो कि पर्यावरण और जीवनधारिता के लिए काम कर रहे हैं, शहर को 10 में से मात्र एक अंक दिया।

लंदन 2012

2012 के ओलम्पिक के लिए पूर्वी लंदन के महत्वपूर्ण भाग निचले "ली वैली" का पुननिर्माण कराने की योजना बनायी गयी है जहां बहुत से खेलों का आयोजन किया जाना है। जबकि पर्यावरणविदों का कहना है कि "ली" नदी सहित नियोजित विकास के परिणामस्वरूप "सामान्य भूमि भौगोलिक पुर्नरचना" विध्वंस हो जाएगी। पर्यावरणविदों ने कहा है कि इस निर्माण के कारण बाढ़ राहत व्यवस्था नष्ट हो जाएगी। वन जीवन और पर्यावरण को खतरा उत्पन्न हो जाएगा और 500

बड़े–बड़े पेड़ काट डाले जाएंगे। निचली "ली वैली" जल प्रवाह का विस्तृत स्त्रोत है जो कि वन पर्यावरण और पक्षियों के आप्रवजन के लिए महत्वपूर्ण है।

एशियन खेल

दिल्ली 1982

बड़े खेलों की श्रंखला में 1982 के दिल्ली एशियाड भी थे। जब इन एशियन खेलों को कम समय में उन प्रस्तावों को पूरा करने के प्रेरक के तौर पर देखा जा रहा था जो प्रस्ताव एशियन खेलों के अभाव में पूरा होने में बहुत लम्बा समय लेते। साथ ही यह बहानेबाजी की गयी कि ये खेल नई और महंगी तकनीकी से परिचित कराएंगे। यद्यपि भारत ने इन खेलों की निविदा 1976 में ही पा ली थी लेकिन 1980 तक कोई भी काम नहीं किया गया लेकिन जैसे ही "इन्दिरा गांधी सरकार" सत्ता में आयी, समयसीमा के अन्दर काम पूरा होने के लिए खेलों के लिए आवश्यक निर्माण कार्य पूरा करने की सुविधा दी गई। सभी बड़े निर्माण कार्यों को "दिल्ली मास्टर प्लान" के तहत पूरा किया गया और उस समय राष्ट्रीय गौरव का शिगूफा छोड़ा गया। इन निर्माणों में स्टेडियम अन्य खेल सुविधाएं, रिंग रेलवे, होटल और फ्लाईओवर शामिल हैं।

मेलबार्न 2006

मेलबार्न का प्रमुख खेल मैदान, मेलबार्न क्रिकेट ग्राउंड, जो खेलों की तैयारी के लिए पुनःनिर्मित किया गया, अब "ईको फ्रैन्डली इमेज" के तहत एक व्यवसायिक आवास में परिवर्तित किया जा रहा है। फिर भी पर्याविदों का कहना है कि इसका निर्माण सार्वजनिक पार्क भूमि पर किया गया था। इससे भी ज्यादा 2000 पेड़ों को खेल गांव बनाने के चलते काट डाला गया। इमारत बनाने के नियमों को अनदेखा किया गया और 15 मंज़िल इमारतों तक का निर्माण किया गया जबकि नियमानुसार केवल 24 मी. ऊंचाई तक की समयसीमा उस विशेष क्षेत्र में तय की गयी थी।

दिल्ली 2010

दिल्ली में राष्ट्रमंडल खेलों के लिए यमुना नदी स्थल को विध्वंस कर दिया गया क्योंकि योजना के अनुसार इसको पर्यटको के लिए व्यवसायिक स्तर पर विकसित करना था और राष्ट्रमंडल खेलों के लिए 40 हेक्टेयर स्थल पर खेलगांव बनाया जा रहा है। इस ज़मीन से और ज्यादा लाभ कमाने के लिए डी.डी.ए. के साथ निजी क्षेत्र ने भी नदी स्थल पर विकास करने के नई योजनाएं पारित की है।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने 2005 में डी.डी.ए. को 25 कि.मी. भूमि (यमुना बेल्ट की) अधिग्रहण करने और उसे व्यवसायिक बनाने की अनुमति दी थी। अब इस ज़मीन पर निर्माण कार्य चालू है और अनापत्ति प्रमाणपत्र भी जारी कर दिया गया।

फिर भी पर्यावरणविदों ने ये चेतावनी दी है कि नदी स्थल पर निर्माण कार्य जबकि यह एक उच्च भूकम्पीय क्षेत्र है और क्योंकि नदी के किनारों को कंक्रीट से ढकने से

राष्ट्रमंडल खेलगांव और इसका पर्यावरणीय प्रभाव निर्धारण

जिस तरह से विकास कार्यों के लिए (नदी स्थल पर) अनापत्ति प्रमाण पत्र दिया गया, वह बताता है कि कार्य कराने का कितना ज्यादा दबाव है। खेलों की निविदा (ठेका) प्राप्त करने के तीन साल बाद डी.डी.ए. ने (अक्टूबर 2006) पर्यावरण और वन मन्त्रालय से जिस तरह से अनापत्ति प्रमाण पत्र हासिल किया वह इस काम की महत्वपूर्णता और जल्दबाजी की चुगली करता है।

निरीक्षण कमेटी के विशेषज्ञों ने अगले महीने उस स्थल का निरीक्षण किया और सिफारिश की कि डी.डी.ए. किसी दूसरे और विकल्प की तलाश करें। लेकिन निश्चित समय सीमा का बहाना कर डी. डी.ए. ने पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय पर दबाव डाला। आखिरकार पर्यावरण और वन मन्त्रालय ने दिसम्बर में इस शर्त पर प्रमाण पत्र जारी कर दिया कि इस स्थल पर जो भी निर्माण कार्य होगा वह अस्थायी होगा और वर्षा के पानी का बहाव नहीं होगा।

जनवरी 2007 में डी.डी.ए. ने सी.डब्ल्यू.आर.पी.एस. पूना द्वारा बाढ़ के लिए एक अध्ययन का प्रस्ताव रखा और पर्यावरण एवं वतमंत्रालय इस पर सहमत हुआ।

फरवरी महीने में सी.डब्ल्यू.पी.आर.एस. ने हाइड्रयूलिक मॉडल अध्ययन रिपोर्ट सौंपी। अन्तिम रिपोर्ट पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय को मार्च में सौंपी गयी और डी.डी.ए. ने इसे अपनी निर्माण प्रक्रिया को जारी रखने के लिए उपयुक्त माना। पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय ने अप्रैल में यह

इस तरह डी.डी.ए. ने सारी नियम और कानून प्रक्रिया को धता बताकर 6 महीने के भीतर ही अनापत्ति प्रमाण पत्र हासिल कर लिया।

इस तीव्र प्रक्रिया के तहत एक निजी परामशदात्री संस्था ने (ई.क्यू.एम.एस. प्रा. लि.) ने डी.डी.ए. को राष्ट्रमंडल खेलों के निर्माण के प्रस्ताव के कारण पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव की रिपोर्ट सौंपी जिसमें निम्न प्रतिकूलता प्रभावों का खुलासा किया गया।

राष्ट्रमंडल खेलों का प्रस्ताव रिहायशी इलाके और अन्तर्राष्ट्रीय इलाके, दो भागों में बांटा गया है। जहां रिहायशी इलाके में "एयरकंडीशन्ड अपार्टमेन्टस", भोजनशाला, स्वास्थ्य केन्द्र, मीडिया केन्द्र और बैंकिंग सुविधाएं हैं, वहीं "इन्टरनेशनल ज़ोन" में मुख्य प्रवेश केन्द्र लॉजिस्टिक सेन्टर केन्द्र, "सरेमनी प्लाजा" फुटकर बिक्री सुविधा, मीडिया सेन्टर, सांस्कृतिक केन्द्र, यातायात केन्द्र, सूचना केन्द्र, विश्राम गृह और मनोरंजन केन्द्र जैसी सुविधाएं शामिल हैं। इसके अलावा "विलेज ऑरेशन और सहायक क्षेत्र" एक "ट्रांसपोर्ट मॉल" और अभ्यास क्षेत्र शामिल हैं। इन दो क्षेत्रों के निर्धारण और उनमें से एक "इन्टरनेशनल ज़ोन" जिसे अस्थायी रूप से बसाया जा रहा है या बाद में इसे होटल में तब्दील कर दिया जाएगा। यह अभी भी साफ तौर पर नहीं बताया जा रहा है। ई.आई.ए. ने न तो इसका कोई प्रभाव परीक्षा की है कि इस "इन्टरनेशनल ज़ोन" के हटने से होने वाले विध्वंस और कंकरीट से उस यमुना क्षेत्र का क्या नुकसान पहुंचेगा।

- इन दोनों स्थानों के बारे में ई.आइ.ए. का कहना है कि राष्ट्रमंडल गांव की कुल जनसंख्या, खेलों के दौरान 8000 या 10000 होगी और खेलों के बाद 11500 से 15000 तक होगी। लेकिन यह अभी तक साफ नहीं किया गया है कि यह "किस जनसंख्या" की बात की जा रही है।

- "ई.आइ.ए." इस प्रश्न का भी कोई जवाब नहीं देता कि वह "एयंकंडीशन्ड अपार्टमेन्ट" जो लगभग 150 मी. स्क्योएर में (आंकड़ों के अनुसार) है क्या वह इस तरह से बनाया गया कि वह खेलों के बाद "जनता के उपयोग में काम में लाया जा सके"।

यदि 3.755 एम.एल.डी. पानी की आवश्यकता है जैसा कि ऊपर की गणना से हमें मालूम पड़ता है तो जाहिर सी बात है कि इसके निकासी के लिए 'सीवेज' 3.004 एम.एल.डी. या 0.67 एम.सी.डी. की क्षमता वाले होंगे। लेकिन "सीवेज" ट्रीटमेंट प्लांट के अर्न्तगत अक्षरधाम मंदिर और राष्ट्रमंडल खेल गांव के लिए 1 एम.जी.डी. (सीवेज की क्षमता) है जो कि पर्याप्त नहीं है, लेकिन ई.आइ.ए. इस बात से सहमत नहीं है। यदि इस एस.टी.पी. केन्द्रीय जल और शक्ति शोध स्टेशन द्वारा जो बाढ़ योजना तैयार की गयी है लेकिन इस योजना में भी कुछ खामियां हैं जिन्हें गौर करना ज़रूरी है।

नदी (यमुना) की आगे की जैकेटिंग करने का प्रस्ताव इस रिपोर्ट में शामिल है लेकिन यह प्रस्ताव इस मॉडल के उद्देश्यों की पूर्ति नहीं करता और यह एक गम्भीर खामी है क्योंकि डी.डी.ए. द्वारा तैयार ओ ज़ोन डेवलेपमेंट प्लान के अनुसार वजीराबाद और ओखला के बीच तीन स्तरों पर "जैकेटिंग" की योजना बाढ़ योजना के तहत प्रस्तावित और चिन्हित है।

चार अन्य पुलों का प्रस्ताव भी इस योजना में शामिल है लेकिन इन निर्माणों में "बाढ़ स्तर" के मापन और पुर्वानुमान को ध्यान में नहीं रखा गया है। यद्यपि उनमें से एक निजामुद्दीन रेलवे पुल का निर्माण है और वह बाढ़ के बहाव को रोकने में योगदान देगा।

अचानक ही बांधों से बहाव के लेन निकासी प्रवाह (जैसा कि 1978 में ताजेवाला और 1964 और 1977 में साहिबी नदी में) या (जैसा कि 1978 और 1988 में मुखर्जी नगर और मॉडल टाऊन में) लेकिन मॉडल टाऊन में यह तथ्य जोड़ा नहीं गया है)।

जहां डिस्चार्ज डेटा के तौर पर 7022 क्यूमस (1988) को लिया गया है जबकि 1978 में सर्वोच्च उच्च स्तर पर डिस्चार्जिंग किया गया था जो कि 7,900 क्यूमस था और वास्तव में वैज्ञानिक मूल्यांकन के लिए 100 वर्ष के दस्तावेजों के "डेटा" लेना चाहिए था (क्योंकि 1900 से दिल्ली को 6 बड़ी बाढ़ों का सामना करना पड़ा है)। हालांकि दिल्ली में जितने भी पुश्ते या छोटे बांध हैं केवल आर.एम.आई. ही पिछले 25 सालों से बाढ़ तीव्रता के मॉडल के तौर पर लिया गया है। लेकिन यदि 100 साल के "डेटा" को लिया जाए तो यह असफल ही होगा।

इस मॉडल में यह भी शामिल किया गया है कि यदि बाढ़ का स्तर बांध के नोज़ तक बढ़ा तो बांध के नोज़ को मजबूत करने का भी सुझाव दिया गया है।

लेकिन अगर हाइड्रोलिक तत्व जो बाढ़ के समय बांध को आक्रमित कर उसके आधार को कम बोर करेंगे वहीं राष्ट्रमंडल गांव की बढ़ी हुई ज़मीन से जो "लीन सीज़न" के दौरान जो "रिवर्स ग्रेजुएट" विशेषकर

शहर की सुरक्षा

जैसा कि दस्तावेजों में दिखाया गया है कि बड़े खेल, बेदखली, बेघरों को बाहर करना, पुलिस उत्पीड़न, जीवनयापन कीमत का जब्तीकरण और पर्यावरण को खतरा उत्पन्न कर शहर के नागरिकों के एक बहुत बड़े भाग के लिए नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। परिणामस्वरूप बहुत से समुदायों ने इस तरह की कार्यवाहियों और खेलों के आयोजन के खिलाफ आवाज़ उठाई है। फिर भी लाभ कराने वाले खेलों के तर्क के साथ ही इस तरह के विरोध को कुचल दिया जाता है। कोई

भी शहर इन खेलों के लिए तब तक मेजबानी नहीं कर सकता जब तक कि वह इस बात की गारन्टी न दे कि वह खेल परिसर और उसके बाहर किसी भी तरह का कोई प्रतिबंध नहीं लगाएगा। शहर और सरकार अपनी साफ छवि दर्शाने के लिए इस तरह के किसी भी क्रियाकलापों (विरोध) को प्रतिबन्धित कर देती है। सरकार कानून बनाकर किसी भी तरह के नागरिक अधिकारों का हनन करने को तैयार रहती है, खासकर शान्तिपूर्वक ढंग से बैठक और सभाऐं या प्रदर्शन करने के अधिकार को भी कुचल देती है। स्थानीय नागरिकों से, बड़े अंर्तराष्ट्रीय व्यापारिक समूहों और पर्यटकों की वेदी पर बलिदान मांगा जाता है।

यह सब सुरक्षा के नाम पर किया जाता है। इस तरह राज्य एक पुलिस राज्य में तब्दील होकर, भारी सरकारी मशीनरी, सेना और पुलिस दल के जवानों को निरीक्षण और देखभाल के लिए नियुक्त कर देती है जिससे शहर का आम जन–जीवन अस्त–व्यस्त और कठिन हो जाता है। खिलाड़ियों, पत्रकारों, अधिकारियों और दर्शकों की सुरक्षा महत्वपूर्ण हो जाती है और ये मानव–अधिकारों को दबा कर, उन्हें मुहैया करायी जाती है। उन समुदायों के लिए भी कठित हो जाता है जो इस खेल आयोजन की सबसे ज्यादा पीड़ा भुगतते हैं। उन लोगों के खिलाफ कठोर कदम उठाए जाते हैं जो इस बड़े आयोजन के माध्यम से अपने साथ हुए अन्याय को अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय तक पहुंचाने की इच्छा रखते हैं। इन खेलों के लिए किए जाने वाले नागरिक स्वतंत्रताओं के विरोध के कुछ उदाहरण आगे किए जा रहे हैं।

ओलम्पिक

मैक्सिको 1968

1968 में मैक्सिको में ओलम्पिक शुरू होने के दस दिन पहले नागरिक स्वतंत्रताओं के लिए प्रदर्शन कर रहे 300 लोगों को पुलिस ने मार डाला था।

सियोल 1988

दक्षिण कोरिया की तानाशाह सरकार ने लोकतंत्र की मांग कर रहे झुग्गवासियों के प्रदर्शन को कुचलने के लिए बड़ी भारी संख्या में पुलिस बल लगाया।

सिडनी 2000

सिडनी ओलम्पिक का मतलब सिडनीवासियों के लिए था कि मकानों के किराए में वृद्धि, बेघर होना, भारी पुलिसबल की तैनाती, नौकरियों पर आक्रमण, घना ट्रैफिक और वातावरण और पर्यावरण को नुकसान। परिणामस्वरूप प्रतिबन्ध बढ़ गए। और ये प्रतिबन्ध उनके लिए और ज्यादा कठिन हो गए जो मौलिक निवासी अपने ऊपर 1788 से इन प्रतिबन्धों को झेल रहे थे और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को इस बारे में बताने के लिए मीडिया का सहारा ले रहे थे। इस विरोध प्रदर्शन को बड़े स्तर पर नियंत्रित करने के लिए सिडनी प्रशासन ने भारी संख्या में पुलिसबल, 30,000 निजी सुरक्षा गार्ड, संघीय पुलिस एजेन्ट, एन.एस.डब्ल्यू पुलिस बल और 10 हजार से अधिक ओलम्पिक स्वयंसेवकों को नियुक्त किया और इनको किसी भी व्यक्ति को प्रतिबन्धित करने और गिरफ्तार करने के लिए असीमित अधिकार और शक्ति दे दी गयी थी। सेना के विशेष जवानों को 24 घंटे "एलर्ट" रहने के लिए कहा गया और "होल्सवर्थी आर्मी वेस" जो कि सिडनी के बाहर है, ब्लैकहॉक हेलीकाप्टर को आस्ट्रेलिया के उच्चवर्गीय क्षेत्र की निगरानी के लिए रखा गया।

वहीं कमांडो सुरक्षा पूर्वी तिमोर में ओलम्पिक स्थल की रक्षा के लिए भेज दी गयी थी।

एथेन्स 2004

एथेन्स में बहुत बड़े स्तर पर सुरक्षात्मक कार्यवाहियां की गयी। राज्य ने किसी तरह के प्रदर्शन और हड़ताल पर प्रतिबन्ध लगा दिया। पूरा शहर सर्विलांस कैमरों से लैस हो गया जिसमें 1,000 कैमरे ओलम्पिक स्थान और उसके आस–पास लगाए गये और 300 कैमरे सार्वजनिक स्थानों पर सामाजिक गतिविधियों पर नियंत्रण रखने के लिए लगाए गए। सरकार ने 2 मिलियन डालर सुरक्षा पर खर्च किए और सुरक्षा के लिए 80,000 पुलिस बल, दंगा पुलिस और सेना के जवानों की नियुक्ति की गयी थी।

यूनान से बाहर से आने वाले नागरिकों को कानून तोड़ने से रोकने के लिए एथेन्स के "ग्रीक" कार्यालय मिलिट्री कैम्प "डिटेन्शन सेन्टर" के रूप में कार्य करने लगे। लेकिन वास्तव में "रोमा" लोगों और शरणार्थियों तथा राजनैतिक बंदियों (कैदियों) की दुदर्शा के कारणों को देखा गया। पुलिस ने बलपूर्वक, हजारों, अप्रवासियों, भिखारियों, नशेबाजों, और बेघर लोगों को शहर से बाहर खदेड़ दिया।

बहुत से विधिवत पहचान और परिचय पत्र के बिना गिरफ्तार कर लिए गए या अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के उल्लंघन के तहत रोक दिए गए।

हजारों कुत्तों को ज़हर दे दिया गया जिसमें कुछ छोटे पिल्ले भी थे और हजारों रोमा (जिरसी) लोगों को बिना हर्जाना दिए एथेन्स से बाहर कर दिया गया।

बीजिंग 2008

बीजिंग में बेदखली के खिलाफ बड़े पैमाने पर हुए विरोध प्रदर्शन को पूरी तरह से कुचल दिया गया। मानवाधिकारों के बारे में आई.ओ.सी. (अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति) को पत्र भेजने वालों को गिरफ्तार कर लिया गया है। प्रशासन ने इन्टरनेट प्रयोगकर्ताओं, तिब्बतियों, "फ्लून्गोंग स्प्रिच्युएलिटी मूवमेंट" के सदस्यों, विदेशी छात्रों, उइगुर मुस्लिम अल्पसंख्यकों, लोकतन्त्रवादियों, विदेशी पत्रकारों, को ओलम्पिक के नाम पर, इन सब लोगों पर दबाव डाल दिया गया। इनमें से बहुत से संगठन पूरे विश्व में "बीजिंग ओलम्पिक के बहिष्कार" की मुहिम चला रहे हैं।

राष्ट्रमंडल खेल

क्वावालाम्पुर 1998

क्वावालम्पुर में प्रशासन ने जन प्रदर्शनों को दबा दिया और मीडिया को भी खदेड़ दिया पर पुलिस कार्यवाही को जो इन प्रदर्शनों का कवरेज कर रहे थे।

मेलबार्न 2006

मेलबार्न ओलम्पिक के दौरान (सिडनी ओलम्पिक 2006) हजारों आस्ट्रेलिया के मूल निवासी पूरे आस्ट्रेलिया से मेलबार्न आए ताकि वे उस अन्याय को दुनिया को बता सके जो उन्होंने झेला है। फिर भी आस्ट्रेलियाई प्रशासन ने उन्हें बाहरी बताया।

कौन पराजित कौन विजेता

यह देखा गया है कि इन बड़े खेलों की सामाजिक आर्थिक और पर्यावरण की कीमत उससे वसूल की जाती है जो आर्थिक सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर है। साथ ही वह मानवाधिकारों के हनन का दर्द भी सहता है।

ये खेल बहुत बड़ी मात्रा में शहरी लोगों के बेदखली का कारण बनते हैं और सार्वजनिक स्थानों के निजीकरण तथा देशी लोगों के वाहक बनते हैं।

यह आयोजन अपने पीछे कानून के अत्याधिक प्रयोग की गलती, कर्ज का बोझ और सार्वजनिक सम्पत्तियों के निजीकरण को छोड़ जाते हैं। पूरा शहर साधारण नागरिक के लिए शत्रु बन जाता है और उसकी मौलिक आवश्यकताएं पर्यटकों के अधीन कर दी जाती हैं। शहर में बड़े व्यापारियों के आने से सार्वजनिक सम्पत्तियों का व्यक्तिकरण हो जाता है ओर छोटे व्यापार, परम्परागत उद्योगों, वेन्डरों को प्रतिबन्धित कर दिया जाता है। परिणामस्वरूप आजीविका का संकट गहरा जाता है।

तो क्या ये सवाल नहीं पूछा जाना चाहिए कि इन सब प्रतिकूलता के बावजूद भी शहर क्यों इन खेलों के आयोजन के लिए आतुर रहते हैं?

किसे लाभ पहुंचता है

इस सवाल का जवाब उन शक्तिशाली व्यापारिक संगठनों और सरकारी तंत्र के उच्चवर्गीय लोगों से मिल सकता है जो इन खेलों के माध्यम से सार्वजनिक खर्चे से निजी लाभ कमाते हैं और यह सब करने के लिए एक संगठित इकाई की तरह काम करते हैं।

रियल स्टेट, होटल, पर्यटन और यातायात जैसे बड़े व्यापारिक समूह बड़ा लाभ कमाते हैं। क्योंकि इन खेलों के बहाने शहर की सार्वजनिक सम्पत्ति को एक तेज प्रक्रिया द्वारा निजी उपभोग के लिए प्रयोग करने की छूट मिल जाती है। ये खेल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक संघो और समूहों को सार्वजनिक सम्पत्ति को अपने लाभ के लिए प्रयोग करने की खूली छूट देते हैं। शहर को एक उत्पाद के "पैकेज" के रूप में बेचकर यह दर्शाया जाता है कि खेल और पर्यटन आर्थिक लाभ कराते हैं। हाल के दशकों में ये खेल व्यापारिक और कोरपोरेट लालच की पूर्ति का यन्त्र साबित हुए हैं। बहुत से बहुराष्ट्रीय व्यापारिक घराने, जिनका पर्यावरण रिकार्ड बहुत ही भयावह है। 2 हफ्ते की विज्ञापन की चकाचौंध में स्पोर्टसमैनशिप (आइडल) बन जाते हैं।

कयोंकि ये खेल टेलिविज़न प्रसारण और मीडिया के कारण करोड़ो लोगों का ध्यान आकर्षित करते हैं। कम्पनियां भी "सपान्सरशिप" और विज्ञापनों के लिए लाईन लगाए खड़ी रहती है।

इस तरह के खेलों के विजेता इन खेलों के आयोजन कमेटी के वे सदस्य भी हैं जो बड़े कारपोरेट घरानों से और टेलिविज़न अधिकार बेचने से मिलने वाली मालगुज़ारी जो कि प्रायोजन और विज्ञापन से मिलती है, इसमें से एक बड़ा हिस्सा अपने लिए बांट लेते हैं।

और वे मीडिया समूह भी विजेता हैं जो इन खेलों के पीछे की सच्चाई छिपा कर इन खेलों के कारण विज्ञापनों से होने वाली आय प्राप्त करते हैं और इसलिए वे इन खेलों को एक उत्सव की तरह पेश करते हैं।

लेकिन इन खेलों के सबसे बड़े विजेता तो "रियल स्टेट" के वे खिलाड़ी हैं जो इन खेलों को अपने "निर्माण कार्यों" व्यवसाय को आगे बढ़ाने के साधन (construction) के रूप में प्रयोग करते हैं। क्योंकि

ये खेल इनके व्यवसाय को छोटे समय में ही बहुत आगे बढ़ा देते हैं। रियल स्टेट लॉबी शहरी नवीनीकरण के नाम पर अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा देती है। क्योंकि ये व्यवसाय लाभ कमाने का सबसे अच्छा जरिया बन जाता है। शहरी नवीनीकरण कार्यक्रम के नाम पर चुने हुए क्षेत्र पर "कन्स्ट्रक्शन" का काम हाथ में निजी कम्पनियां लेती है। परिणामस्वरूप "रियलस्टेट" (ज़मीन और आवास) की कीमतों में वृद्धि हो जाती है और वे लोग जिनकी आय सीमित है बेदखल कर दिए जाते हैं।

कोई भी इन खेलों के आयोजन के लिए किए गए शहरी नवीनीकरण कार्यक्रमें के परिणाम को देख सकता है।

ओलम्पिक

रोम 1960

नई यातायात व्यवस्था और नई हवाईअड्डों की सुविधा देने के लिए बड़े स्तर पर शहरी निर्माण के लिए बहुत बड़े स्तर पर खर्च किया गया।

टोक्यो 1964

खेलों से सम्बन्धित "प्रोजेक्ट" जैसे 22 हाईवे, दो सबवे और बन्दरगाह को विस्तृत करने सहित कई सुविधाओं न 3 मिलियन डालर खर्च किये गए।

म्यूनिख

इन खेलों के लिए 145 किलोमीटर का नया एक्स्प्रेसवे निर्माण और एयरस्ट्रिप को नवीनीकरण के तहत विकसित किया गया।

मास्को 1980

मान्ट्रियल ओलम्पिक के उदाहरण को देखते हुए, जो कि खेल की वजह से गहरे कर्ज़ में डूब गया था, फिर भी मास्को में नए होटलों, एक नया हवाई अड्डा और एक ओलम्पिक गांव का निर्माण किया गया।

सिओल 1988

इन ओलम्पिक खेलों को एयरपोर्ट, तीन नए सबवे लाईन और कला और संस्कृति के लिए महल बनाने में प्रयोग किया गया।

वार्सिलोना 1992

शहर को "मेकओवर" किया गया। ओलम्पिक खेलों के स्थल को, जो कि एक औद्योगिक क्षेत्र को परिवर्तित कर, समुद्र के किनारे पर्यटकों के लिए खेल मैदान बनाया गया। म्यूज़ियम, थियेटर और कलादीवारें नवीकरण की गई

एक नया आधुनिक हवाईअड्डा भी बनाया गया।

एथेन्स 2004

शहर के आधुनिक इतिहास में सबसे बड़े सार्वजनिक प्रस्तावों को देखा गया। हाईवे, नये हवाई अड्डा और "सबअर्बन रेलवे" व्यवस्था लागू की गयी थी।

बीजिंग 2008

इमारतें बनाने के लिए बहुत बड़े स्तर पर खर्च किया गया हे। शहर को स्काईलाईन इमारतें प्रदान करने के लिए जितना बजट खर्च किया गया उस बजट का अनुपात तीन मैनहैटन के बजट के बराबर है।

2008 तक शहर में एक्स्प्रेस्वे, रिंगरोड और लगभग 150 किलोमीटर की "लाइट रेल" तथा "सबवे ट्रैक" बना दिया जाएगा। इसके अलावा 318 किलोमीटर "डाउनटाऊन" गली बनायी जाएगी। और 690 किलोमीटर की सीवेज लाईन डाली जाएगी। शहर को साफ रखने के लिए चीनियों ने कोयले को जलाने जैसे भारी उद्योगों को दूसरे शहरों में लगवा दिया और कोल बर्निंग प्लान्टस तक साफ और सुरक्षित प्राकृतिक गैस पाईप लाईन बिछाई गयी है। खेल शुरू होने के दो महीने पहले सभी फैक्ट्रियां बन्द कर दी जाएंगी। ऑटोमोबाईल्स पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाएगा और रोज़ शहर की सड़कों को "स्प्रे" और साफ किया जाएगा। यह भी यो बना है कि

बैंकूबर (2010)

शहर को सुधारने की प्रक्रिया जारी है जिसके तहत नई "ट्राजिंट लाईन" "सी–टू–स्काई" हाइवे का निर्माण और चौड़ीकरण तथा 615 मिलियन डॉलर की लागत से बनने वाले सभा भवन और प्रदर्शनी केन्द्र के अलावा और भी अन्य निर्माण शामिल हैं।

लंदन (2012)

राष्ट्रमंडल खेल

क्वालालाम्पुर 1988

क्वालालाम्पुर राष्ट्रमंडल खेल के लिए बहुत से होटल, "कंडोमिनियम" और अन्य निर्माण सहित "क्वालालाम्पुर सिटी सेन्टर (DKCC)" और विश्व की सबसे ऊंची इमारत का दर्जा देने के लिए "पेट्रोन्स टॉवर" का निर्माण किया गया था। सड़कों को चौड़ा किया गया और "लाइट रेलवे" तथा दूसरी आवागमन वाली ट्रेनों के लिए नये मार्ग निर्मित किए गए।

पर्यटन बढ़ोत्तरी का सच

हमेशा यह कर निर्माण कार्य का विकास किया जाता है कि यह शहर के सभी वर्गों को लाभ देगा। लेकिन हकीकत तो कुछ और ही होती है। वास्तव में ये विकास कार्य विशेषाधिकार पाए लोगों और "इन्फ्रास्ट्रक्चर" से जुड़े बड़े व्यापारियों को ही लाभ पहुंचाते हैं। ज्यादातर यातायात और पुनःनिर्माण पर ध्यान दिया जाता है ताकि खेलों के दौरान और बाद में पर्यटक आकर्षित होते हैं। पर्यटन का बढ़ना, खर्च हुए धन की वापसी कराता है। लेकिन ये लाभ अतिशय बताये जाते हैं। दस्तावेज बताते हैं कि इस तरह के खेलों के दौरान केवल छोटे समय (कम समय) के लिए ही पर्यटन में वृद्धि होती है। जहां इस तरह के खेल एक निश्चित वर्ग के पर्यटन को आकर्षित करते हैं वहीं सामान्य परिस्थितियों में आने वाले पर्यटकों की संख्या में कमी आती है। कुछ प्रमुख शहर बड़े–बड़े दावों और प्रचार के बावजूद आशानुरूप पर्यटन में बढ़ोत्तरी न होने के कारण असफल साबित हुए हैं। आगे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं।

ओलम्पिक

साल्ट लेक सिटी 2000

ओवरसीज़ पर्यटकों के चलते स्थानीय पर्यटन पर बहुत बुरा असर पड़ा। स्थानीय व्यापारियों को संकठ से गुज़रना पड़ा क्योंकि शहरवासियों ने खेलों को अनदेखा कर छुट्टियां मनाना बेहतर समझा। तथ्य ये है कि देश को, अन्य क्षेत्रीय भागों में, पर्यटन और यात्रा सम्बन्धी आर्थिक गतिविधियों में घाटे का अनुभव हुआ।

सियोल 1988

सियोल ओलम्पिक के दौरान भी आशा के विपरीत बहुत ही कम पर्यटक आऐं।

वार्सिलोना 1992

वासिलोना प्रभाव के चलते खेलों को सफलता के तौर पर देखा जाने लगा जब ओलम्पिक के कारण शहर विश्व के मानचित्र पर आ गया। लेकिन अगर कोई व्यापारिक आंकड़ों पर गौर करे तो यही बात सामने आती है कि 1992 के दौरान बिक्री दर बहुत कम हो गयी थी। शहर में आने वाले पर्यटकों (डेढ़ मिलियन) की संख्या उससे बहुत कम थी जितनी की आशा की गयी थी। उन्होंने (आने वाले पर्यटकों) ने पैसा भी बहुत कम खर्च किया।

अटलांटा 1996

अटलांटा में भी पर्यटकों द्वारा "बिक्री" नहीं बढ़ी। "विलेज वाइस" के स्तंभकार नील डिमान्ड्स; साऊथ फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के फिलिपपोर्टर, 1996 के पर्यटन आंकड़ों, ग्राहक बिक्री, होटलों की आवासों की कीमतें और एयरपोर्ट के प्रयोग के आंकड़ों के अनुसार 1996 ओलम्पिक के दौरान आंकड़ों में पहले की तुलना में कोई व्यापारिक लाभ में बदलाव नहीं हुआ।

सिडनी

सिडनी में 1994 और 2004 के दौरान 201 मिलियन ओवरसीज़ पर्यटकों सहित 4 बिलियन डालर की कमाई की उम्मीद लगायी गयी थी लेकिन फिर भी पर्यटकों की संख्या कम ही रही।

एथेन्स 2004

ग्रीस (यूनान) 15वां बहुत ही लोकप्रिस पर्यटन स्थल है और लगभग 14 मिलियन पर्यटक हर साल वहां जाते हैं और ग्रीक सरकार ने सोचा कि ओलम्पिक के माध्यम से पर्यटन को और भी ज्यादा आगे बढ़ाया जा सकता है। लेकिन वास्तविक रूप से ओलम्पिक वर्ष (2004) के दौरान बहुत ही कम पर्यटक एथेन्स पहुंचे। 2004 में पिछले वर्ष की तुलना में टिकट बिक्री में 8% की कमी आयी और एडवांस टिकट बिक्री और भी ज्यादा कम हो गयी।

2003 में मात्र 139 मिलियन पर्यटक आए और इसमें 7% की कमी आयी। 2004 में तो यह संख्या मात्र 13.1 मिलियन रह गयी। एथेन्स के जो होटल एक रात में 1 लाख से 1.5 लाख बिस्तरों के उपयोग की आशा लगाए हुए थे वास्तव में मात्र 70 हजार बिस्तरेां की ही बिक्री हुई। होटलों की कीमतें कम हो गयी। कुछ तो आधे दामों पर (खेल के दौरान) प्रयोग में लाए गए।

एशियन गेम्स 1982 दिल्ली

यह दावा किया गया कि खेलों के दौरान हजारों पर्यटकों की भीड़ होगी। लेकिन सिर्फ 200 पर्यटक ही पहुंचे।

राष्ट्रमंडल खेल : भारत में ही क्यों

पिछले अध्याय में इन राष्ट्रमंडल खेलों की आयोजन की प्रक्रिया के तहत "कौन विजेता कौन पराजित" में आंकड़ों के विश्लेषणों को इसलिए प्रकाश में लाया गया है ताकि कोई भी भारत के 2010 के राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी का मूल्यांकन कर सके। इन खेलों के लिए भारत की निविदा प्रक्रिया पिछले एक दशक से ज्यादा समय से चल रही थी लेकिन 2010 में भारत पहली बार इन खेलों की मेजबानी कर रहा है। इसलिए इन कारणों को समझना आवश्यक हो जाता है जिसके चलते भारत को इन खेलों की मेजबानी करने का मौका मिला है।

विश्वस्तरीय एजेन्डा

वास्तव में ये खेल भारत को उस पुरस्कार के तौर पर प्रदान किए गए हैं, जिसके तहत एक लम्बी प्रक्रिया के तहत सफलतापूर्वक अपने व्यापार के संचालन के लिए "मुफ्त व्यापार" राज बनाने के लिए पिछले दशक में शुरू हुआ था।

1991 से खुली अर्थव्यवस्था के चलते अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक निगमों और वित्तीय संस्थाओं द्वारा शहरों को 'विश्वस्तरीय' शहर में परिवर्तित करने के लिए भयंकर दबाव बनाया गया ताकि उनके प्रवेश और क्रियाकलापों के लिए रास्ता साफ हो सके। शहरों को इनकी मर्जी के मुताबिक परिवर्तित किया जा रहा है। निजीकरण के माध्यम से स्थान और सेवाएं उनके लाभ के लिए प्रदान की जा

रही हैं। शहर, पर्यटकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से डिज़ाइन किया जा रहा है ताकि ज्यादा से ज्यादा आय (माल गुजारी) बटोर सके। तथ्य ये है कि विश्वस्तरीय शहर की परिभाषा वह है जो दिल्ली विकास प्राधिकरण (डी.डी.ए.) ने परिभाषित की है : "अन्तर्राष्ट्रीय सुविधाएं पर्यटन और अन्तर्राष्ट्रीय खेल)।

"विश्वस्तरीय" की ओर मुड़ने का सीधा अर्थ है कि भारत इस मामले को गम्भीरता से असली जामा पहनाने लगा है और फिर इस मामले को गम्भीरता से लिया गया है। यह सब इसलिए क्योंकि "अन्तर्राष्ट्रीय खेल" राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार के खिलाड़ियों को निवेश के लिए बहुत ही उपयुक्त माने जाने वाले निर्माण कार्यों जैसे स्टेडियम, होटल और विशेष यातायात में निवेश करने का अवसर मुहैया कराया है। ये निवेश जनता के फायदे के लिए नहीं बल्कि निजी लाभ के लिए किया गया है।

सुरेश कलमाड़ी ने इसे और सम्भव करने के संकेत दिए जब उन्होंने खेलों की उद्घोषणा के अवसर पर कहा "यह मेरे देश के लिए महत्वपूर्ण है। यह एक बड़ा व्यापारिक अवसर है और इस सपने को सच करने के लिए भारत ने जितनी भी ज़रूरत होगी, इन खेलों को सफल बनाने के लिए उतना खर्च करने का वायदा किया।"

इसका कारण यह था कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने यह कहकर आयोजनकर्ताओ को "बलैंक चेक" दिया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इसकी क्या कीमत है। भारत को राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन कराना चाहिए। उद्योग, शहर के विशाधिकारी वर्ग ने, और मीडिया जोकि शहर को "वर्ल्ड क्लास" बनाने के पक्ष में थे उन्होंने खेल आयोजन को सफल बनाने के निमित्त माहौल बनाया।

एशिया को दोबारा खेल आयोजन का समय देना

भारत की जनसंख्या 1.2 बिलियन है जो और विश्व के सभी राष्ट्रमंडल देशों की जनसंख्या के लगभग आधी जनसंख्या है। 1990 और 1994 में अपनी निविदा गंवाने के बाद विकसित विश्व के निर्माण के तहत "राष्ट्रमंडल खेल संघ" की भारत के प्रति सहानुभूति के चलते इस बार (2010) में भारत को इन खेलों की मेजबानी मिली है। जबकि "गलास्गो और हेमिल्टन" की निविदाएं अच्छी (भारत की तुलना में) थी। लेकिन ये दोनों एक–एक बार मेजबानी कर चुके थे। ब्रिटेन 5 बार और कनाडा 4 बार तथा न्यूज़ीलैंड तीन बार इन खेलों की मेजबानी कर चुका है।

इन राष्ट्रमंडल खेलों की यात्रा 1966 किंगरटन सहित 1998 व क्वालालाम्पुर और ग्लोस्गो और हैलीफैक्स तक से गुज़र चुकी है और कई शहरों में कई कई बार अतः भारत के पक्ष में माहौल बनाया गया।

भारत इन खेलों की मेजबानी के लिए दौड़ में सबसे आगे था। और भारत के साथ सहानुभूति भी इसलिए थी क्योंकि विकसित देश ज्यादातर इसकी मेजबानी हथिया लेते हैं। यह भारत के पक्ष में इसलिए भी रहा क्योंकि इस संघ में एफ्रो–एशियन का वर्चस्व था और आबुजा और नाइजीरिया समस्याओं के चलते और संसाधनों के अभाव में इसे आयोजित करने में असफल थे। अतः पश्चिमी "इमेज" के बदले ऐसे शहर को मेजबानी दी गयी जो कि विकसित होने की अवस्था में हो और जो शक्तिशाली राजनैतिक संदेश भेजने में सफल हो।

निविदा प्रक्रिया की हकीकत

एशिया के दृष्टिकोण से मेजबानी का दायित्व भारत को मिलने के पीछे सबसे बड़ा कारण था कि भारत सरकार ने 2010 की मेजबानी के लिए सारा खर्च वहन करने का वायदा किया। सरकार ने सारे प्रतियोगियों, अधिकारियों, तकनीकी कर्मचारियों, और प्रतिनिधिमंडलों को 25 दिन के लिए मुफ्त यात्रा और आवास उपलब्ध कराने का वायदा किया जिसके चलते राष्ट्रमंडल खेल संघ और अंतर्राष्ट्रीय संघ के अधिकारियों ने भारत के पक्ष में वोट किए। मुफ्त आवास और यात्रा की बात एफ्रो–एशियन खेलों और 2005 हैदाराबाद खेलों के अलावा कभी भी नहीं सुनी गयी लेकिन सरकार ये सुविधा देने के लिए तैयार है।

सबसे महत्वपूर्ण बात ये रही कि वोटिंग होने से पहले भारत ने 72 मिलियन डालर की "एथलीट ट्रेन" योजना का प्रस्ताव रखा जो कि कनाडा के 3.8 मिलियन डालर से ज्यादा बेहतर प्रस्ताव था। इसका अर्थ ये है कि भारत 1 लाख डालर का वितरण, कनाडा, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया और 72 अन्य राष्ट्रमंडल खेलों के बीच करेगा।

निष्कर्ष

बड़े खेलों का "मेजबान शहरों पर प्रभाव का विश्लेषण" हमें यह दिखाता है कि ये खेल और कुछ नहीं बल्कि आर्थिक रणनीति का एक हिस्सा है। और ये बड़ी आर्थिक शक्तियों द्वारा इसलिए बढ़ावा दिए जाते है ताकि शहरी नवीनीकरण के नाम पर ज़मीन हथिया सके और विज्ञापनों से भारी पैसा कमा सके।

वास्तव में होता यह है कि खेलों के बहाने जनता का पैसा किसी न किसी तरीके से निजी हाथों में सौंप दिया जाता है। बड़े–बड़े बिल्डर, एजेन्ट और वे लोग जो पर्यटन और सेवा क्षेत्रों के मंझे हुए खिलाड़ी हैं, वास्तव में ये लोग तो अपनी तिजोरियां भरते हैं और आम आदमी कर्जदार तो होता ही है साथ ही पर्यावरण और सामाजिक दशाओं के नकारात्मक प्रभाव को भी झेलता है। वह बेदखली पर्यावरण विनाश, मज़दूरों की मौतें, रोज़गार का निजी हाथों में जाना, और समाज के आर्थिक पतन और भ्रष्टाचार का बुरी तरह शिकार हो जाता है।

इस तरह के खेलों को बढ़ावा देने के लिए आमतौर पर यह बहाना किया जाता है कि ये विकास कार्य यातायात व्यवस्था और संचार को बेहतर बनाएगा। फिर भी प्रश्न ये उठता है कि इस तरह की सुविधाएं आखिर किस तरह से प्रदान की जा रही है। क्या ये सुविधाएं बिना खेलों की मेजबानी के भी प्रदान की जा सकती हैं। इस बेहिसाब खर्च का एक बड़ा महत्वपूर्ण भाग अत्यन्त आवश्यक सामाजिक लाभ के क्षेत्रों जैसे शिक्षा, आवास, स्वास्थ्य, और स्कूल तथा आस–पास के क्षेत्रों में खेलों को बढ़ावा देने में खर्च किया जा सकता था। और तब शायद इस धन का बेहतर उपयोग होता। ये खेल बस शहरी और आम शहरी के बीच धन और आय में भी बड़ा अन्तर पैदा करते हैं। वास्तव में सभी मेजबान शहरों में सार्वजनिक संसाधनों का निजीकरण हो जाता है और उस निजिता को बचाने के लिए सुरक्षा आवश्यक बन जाती है ताकि "निजिता" बची रही। सुविधाएं एवं संसाधन जनता के उपयोग की जगह निजी हाथों में चले जाते है। खेल सुविधाएं उन खुली जगहों में बनायी जाती है जो कि सार्वजनिक होने चाहिए जैसे हरा भरा मैदान, पार्क, नदी, तट इत्यादि।

लेकिन खेलों की कीमत पर दामों और करों में बढ़ोत्तरी के कारणों की जनता को जानकारी नहीं दी जाती। खेलों की निविदा प्रक्रिया कभी भी प्रतियोगी नियमों के अनुसार नहीं होती। किए गए वायदों का कभी खुलासा नहीं किया जाता। बजाए इन सबके इन खेलों को राष्ट्रीय सम्मान के प्रतीक के तौर पर पेश किया जाता है। सरकार और मीडिया इन खेलों को इस तरह से जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं कि ये खेल विशेषाधिकार पाए लोगों के लिए आर्थिक और सामाजिक लाभ का

रास्ता खोल दें। ये लोग इन खेलों को एक ऐसे अवसर के रूप में देखते हैं कि इन खेलों को विश्वस्तरीय आयोजन सुविधा देने के नाम पर विकास और पुनःनिर्माण के नाम पर ज्यादा से ज्यादा लाभ कमा सके (निजी लाभ)

वास्तव में यह सब इसलिए होता है क्योंकि सूचना और पारदर्शिता के अभाव के चलते इस देश का आम नागरिक कभी भी इस योग्य नहीं हो पाया कि वह इन खेलों की कीमत और इन खेलों की वजह से एक खास वर्ग को होने और देने वाले लाभ को आलोचनात्मक दृष्टि से देखे और न ही इस योग्य है कि वह खेलों के आयोजन के लिए बनने वाली योजनाओं और प्रक्रिया को प्रभावित कर सके।

दिल्ली में 2010 में राष्ट्रमंडल खेल आयोजित होने जा रहे हैं जिसके लिए तेज़ी से निर्माण कार्य किया जा रहा है। इन खेलों की निविदा (ठेका) जब प्राप्त की गयी थी तो इसे देश की विजय के तौर पर प्रस्तुत किया गया। एक बार जब ठेका मिल गया तो आत्म प्रशंसा का ऐसा प्रोपेगेंडा रचा गया और बालिवुड की एक टीम इस सफलता का जश्न मनाने मेलबार्न पहुंची और 11 मिनट के इस उत्सव की कीमत थी 2.5 करोड़ रु. प्रति मिनट। देश का मीडिया आम आदमी के अधिकारों को अनदेखी कर इस विकास कार्य की तारीफ कर रहा है और इस विश्लेषण में लगा हुआ है कि ये शहर कैसे "वॉल सिटी" से "वर्ल्ड क्लास सिटी" में तब्दील हो रहा है। और ये सब जानबूझकर एक पूर्वनियमित योजना के तहत किया जा रहा है। मेट्रो संकेत, स्टेशन, शापिंग मॉल शहर में बेतरतीब फैलने लगे हैं। और यह सब उस जानकारी को गुप्त रखकर किया जा रहा है कि कैसे इस तथाकथित "वर्ल्ड सिटी" का विकास आम आदमी के अधिकारों को छीन कर किया जा रहा है। उस पर क्या गुज़र रही है और उसे क्या–क्या झेलना पड़ रहा है। यह सब करने के लिए मीडिया, सरकार और देश का व्यापारिक और उच्च वर्ग, इन गरीबों जैसे रिक्शाचालकों, मज़दूरों, स्ट्रीट वेंडरों, सार्वजनिक बसों और झुग्गीवासियों को शहर के सबसे "बुरे" और "गन्दे" प्रतिनिधि के तौर पर पेश कर रहा है। वास्तव में इसी बहाने इस गरीब और आम आदमी के अधिकारों को बुरी तरह कुचल दिया गया है।

शहर के पुर्ननिर्माण के नाम पर ज़मीन को अधिग्रहण करने की पटकथा तो 1996 में पहले ही तैयार हो चुकी थी जब नदी स्थल के स्त्रोतों को खोलने के नाम पर उसे विकसित करने की योजना बनायी गयी। लेकिन इस योजना को लागू करने के लिए "राष्ट्रमंडल खेलों" के आयोजन का सहारा लिया गया। इस ज़मीनी धन को हड़पने की शुरूआत हुई अक्षरधाम मंदिर निर्माण से जब इस मन्दिर को नदी स्थल को तोड़कर बनाया गया था। इस मंदिर का निर्माण "आतंक के खिलाफ युद्ध" के नाम पर देशभक्ति की अलख जगाने के बहाने किया गया था।

शहरों में मेट्रो हेडक्वार्टस भी तेज़ी से तैयार हो रहे हैं। ये सब उस "गेमप्लान" का हिस्सा हैं जो राष्ट्रमंडल खेलों के नाम पर लागू किया जा रहा है। स्वामी नारायण सम्प्रदाय का अक्षरधाम मंदिर अनिवासी भारतीयों के लिए और उन्हीं के पैसों से लगभग 200 करोड़ की लागत से बनाया गया है। और इस महलनुमा भव्य व्यापारिक मंदिर से अब लगभग 5 करोड़ रुपये की सालाना आय होती है। इन खेलों के नाम पर मेट्रो के दरवाज़े खोल दिए गए हैं। जसके पहले चरण के निर्माण की कीमत ही 5000 करोड़ रु. है।

660 करोड़ रुपये से निर्मित किया जा रहा खेल गांव जिसके तहत जनता के 25000 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। साथ ही रियलस्टेट के मालिक ज़मीन खरीदने और बेचने से होने वाले भारी मुनाफा कमाने की उम्मीद लगाये बैठे हैं इस यमुना तल और यमुना तट जिसका व्यापारीकरण हो और जिसकी कीमत वर्तमान में 90,000 करोड़ रुपये से ऊपर पहुंच गयी है।